੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष ९ अंक १२ अगस्त 2016

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥
जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ता की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥
मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥१॥
मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥
हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥२॥
हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥
संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥३॥
हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥
नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥४॥ *(पन्ना ७००)*

श्री गुरु अरजन देव जी जैतसरी राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में मनुष्य के असली मित्र संत-जनों को बताते हुए फरमान कर रहे हैं कि कोई विरला मनुष्य (गुरमुख) ही जानता है कि संसार में असली मित्र कौन है। जिस पर परमात्मा की कृपा हो वही मनुष्य इस बात को समझता है। फिर उस मनुष्य की जीवन-जाच निर्मल हो जाती है, पवित्र हो जाती है। मनुष्य के माता, पिता, पत्नी, पुत्र, रिश्तेदार, भाई आदि सब पूर्व जन्म के संयोग के कारण उसके साथ हैं। अंत समय में इनमें से कोई भी साथी नहीं बनता। सोना, लाल, हीरे, मोतियों की माला के अलावा मन को खुश करने वाली माया में ही लगे हुए मनुष्य की सारी आयु 'हाय-हाय' (और मिल जाए . . और मिल जाए) में ही व्यतीत हो जाती है, मगर मन को संतुष्टि नहीं मिलती, संतोष नहीं मिलता। मनुष्य के पास हाथी हों, रथ हों, हवा के वेग के समान दौड़ने वाले घोड़े हों, वो धनाढ्य हो, ज़मीन का मालिक हो, चार प्रकार की सेना का मालिक हो, इनमें से भी कोई वस्तु साथ नहीं जाती। इन सब चीज़ों का मालिक होने के बावजूद भी मनुष्य अंतिम समय में खाली हाथ (नग्न) ही जाता है।

शबद की अंतिम पंक्तियों में पंचम पातशाह फरमान कर रहे हैं कि जो संत-जन हैं वे परमात्मा को प्रिय होते हैं। उनकी संगत करनी चाहिए (ताकि मनुष्य मन की तृष्णा को शांत कर सांसारिक पदार्थों को एकत्र करने की भाग-दौड़ से बचकर जीवन को शुभ कर्मों में खचित कर 'सफलता' प्राप्त कर सके)। प्रभु के प्यारों की, संत-जनों की संगत करने से इस लोक में तो (आत्मिक) सुख मिलता ही है, परलोक में जाकर भी नाम रौशन होता है, भटकना मिटती है, मुक्ति मिलती है, जन्म-मरण का चक्कर समाप्त हो जाता है।

गुरबाणी के अनुसार मानव-जीवन जीने का ढंग संत-जनों की संगत में, मार्गदर्शन में रहते हुए शुभ कर्म करते रहना है न कि अन्य सांसारिक संगी-साथियों की टेक में पदार्थों को एकत्र करने में ही भटकते रहना है।

संपादकीय

देश की आज़ादी के असल नायक : सिक्ख

कोई देश हज़ारों वर्ष से गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ा रहा हो, गुलामों का भी गुलाम रह चुका हो, उसी देश में लगभग दो सौ चालीस वर्ष की ऐतिहासिक आयु वाली कौम इन सदियों पुरानी गुलामी की जंज़ीरों को तोड़कर स्वतंत्र राज्य स्थापित कर ले, ऐसा महान इंकलाब सिक्ख कौम के अतिरिक्त दुनिया के इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। सदियों से गुलामी झेलकर बे-गैरत हो चुकी भारतीय जनता में स्वाभिमान जगाने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने नानक-निर्मल पंथ की स्थापना की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे की पहुल छकाकर खालसा पंथ की सृजना की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त करके बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने १७१० ई में स्वतंत्र खालसई राज्य स्थापित कर भारतवासियों को सदियों के बाद पहली बार आज़ादी की गर्माहट का एहसास करवाया।

१९४७ ई में भारत की आज़ादी की बात करें तो इसमें भी सिक्खों ने अपनी दो प्रतिशत आबादी के बावजूद ८० प्रतिशत कुर्बानियां देकर आज़ादी का तोहफा भारतवासियों की झोली में डाला। आज़ादी में सिक्खों के लासानी योगदान को पढ़-सुनकर बुद्धि हैरान रह जाती है तथा ऐतिहासिक चिंतकों के मन में ऐसी मार्शल कौम के धर्म-विश्वासों, इसके लासानी इतिहास के बारे में जानने की इच्छा पैदा होती है। सिक्ख कौम के इतिहास के बारे में अध्ययन करके सूझवान चिंतक यह मानते हैं कि सिक्ख इतिहास का आधार गुरबाणी है, इसलिए सिक्ख धर्म की शूरवीरता के बारे में जानने के लिए गुरबाणी, गुरमति सिद्धांतों आदि के बारे में जानना भी आवश्यक है।

गुरु साहिबान ने गुरबाणी द्वारा जो स्वस्थ जीवन-जाच सिक्खों को बख्शिश की वह *"खंनिअहु तिखी वालहु निकी"* वाला मार्ग था। सिक्ख पंथ में शामिल होना *"सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥"* वाले पूर्ण समर्पण-भाव की वचन-बद्धता है। यदि कहीं देश-कौम पर कोई मुसीबत बन जाए तो इसी वचन-बद्धता को निभाते हुए सिक्खों ने दीन के हेतु पुरजा-पुरजा (अंग-अंग) कटवाकर देश-धर्म की लाज रखनी है तथा इतिहास गवाह है कि यह लाज रखी भी है।

ऐसी प्रणधारी शूरवीर कौम गुलामी की हर जंज़ीर को तोड़ने के समर्थ थी। इसके विपरीत *"अंतरि पूजा पड़हि कतेबा"* वाले दीनी समझौतावादी कौम से और हज़ारों वर्ष आज़ादी की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

बे-गैरत जीवन मानसिक गुलामी प्रवान करके अपनी भाषा, अपने पहरावे, अपने सभ्याचार को तिलांजलि देकर ज़लालत भरी ज़िंदगी जीने के लिए सहमत हो जाता है। ऐसी आत्मिक मृत्यु बेहद बदतर होती है। परंतु गुरमति विचारधारा *"जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥"* के कथनानुसार गैरत भरा जीवन जीने का उपदेश देती है। इतिहास इस बात का गवाह रहा है कि सिक्खों ने सिर्फ अपनी इज्ज़त ही नहीं बल्कि दूसरों की इज्ज़त बचाने की खातिर भी अपनी जानें कुर्बान की हैं।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का उपदेश *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥"* सिक्ख कौम की आज़ाद तबीयत को रूपमान करता है। भक्त शेख़ फरीद जी का वचन *"फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥"* वाली जीवन-जाच लाचारी तथा मुहताजी वाला जीवन प्रवान नहीं करती।

भारत की सदियों की दुर्दशा तथा सिक्ख इंकलाब को धर्म के भक्ति-स्वरूप के पक्ष से भी विचारा जा सकता है। धर्म-शास्त्री इस बात को मानते हैं कि आध्यात्मिक जीवन के विगास हेतु निर्गुण भक्ति का मार्ग ज्यादा सफल साधन है। इसके विपरीत सगुण भक्ति आत्मिक विगास के मार्ग में ठहराव का कारण बनती है। निर्गुण भक्ति में सुरति शबद में अभेद होकर *"तिथै जोध महाबल सूर ॥"* वाली पदवी हासिल कर लेती है। सुरति बलवान हो तो शरीर भी बलशाली हो जाता है। *"बलु होआ बंधन छुटे"* के पावन वाक्य अनुसार बल हो तो बंधन (गुलामी) भी छूट जाता है।

भारतीय वर्ण-विभाजन प्रणाली के *"खत्री सबदं सूर सबदं"* द्वारा भारत की गुलामी की दुर्दशा तथा गुरमति की *"सरब सबदं एक सबदं"* के सिद्धांत द्वारा भी भारत की आज़ादी में सिक्खों के योगदान को विचारा जा सकता है। जब इस देश की रक्षा हेतु कुल आबादी के चौथे हिस्से की जिम्मेदारी रह जाए तथा अन्य तीन हिस्से मूकदर्शक बने रहें तो देश की गुलामी निश्चित हो जाती है। इसके विपरीत जब जुल्म के विरुद्ध ये चारे हिस्से एकजुट हो जाएं तो सदियों पुरानी गुलामी की जंज़ीरों को सूत के कच्चे धागे की तरह तोड़ने के समर्थ हो जाते हैं।

भाई गुरदास जी के कथन*"वरनावरन न भावनी खहि खहि जलन बांस अंगिआरा।"* वाले हालात देश की गुलामी तथा दुर्दशा का कारण बने रहे। गुरु साहिबान द्वारा दृढ़ करवाए गए संगत-पंगत के सिद्धांत ने भारत में मज़बूत सामाजिक आधार प्रदान किया, जो गुलामी की जंज़ीरों को गले से उतारने में सहायक सिद्ध हुआ।

सिक्ख धर्म जिस क्षेत्र में पैदा हुआ उसको भारत की खड़ग-भुजा कहते हैं, इसलिए विदेशी हमलावरों का मुकाबला करके सशक्त हुई इस कौम में गैरत, बहादुरी के गुण इसकी रग-रग में समाए हुए थे, इसलिए यह कौम देश को गुलामी से आज़ाद करवाने के समर्थ थी।

दुनिया के इतिहास में मात्र सिक्ख कौम ही एक ऐसी कौम है जिसके आज़ाद रहने की फ़ितरत के कारण सिरों के दाम लगाए जाते रहे, किंतु अफ़सोस कि सिक्खों की कुर्बानियों का मूल्य नहीं पाया गया।

आज जहां देश-विदेश में सिक्खों की प्राप्तियों तथा उनके मान-सम्मान की ख़बरें प्रतिदिन पढ़ने-सुनने को मिलती हैं वहीं भारत में आज तक सिक्खों को उनका बनता हक तथा मान-सम्मान नहीं दिया गया। सिक्ख कौम द्वारा देश की ख़ातिर दी गई बेशुमार कुर्बानियों की कीमत पाने की जगह उनको अभद्र चुटकलों द्वारा मज़ाक का पात्र बनाना बहुत ही शर्मनाक बात है। किसी शायर के लिखे शेयर को सिक्ख कौम के संदर्भ में सदैव स्मरण रखना चाहिए :

दुनिया में वही कौम है ताज़ीम के काबिल,
जिस कौम ने हालात का रुख मोड़ दिया हो।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का इक्कीसवीं सदी में महत्त्व

*-स. सुखदेव सिंह शांत**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सच *"आदि सचु ॥ जुगादि सचु ॥ है भी सचु ॥ नानक होसी भी सचु ॥"* वाला सच है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीन कालों में यह सच व्यापक है इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब का महत्त्व सदैवकालीन है। जब हम इक्कीसवीं सदी में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के महत्त्व की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य केवल यह देखना है कि इस सदी की आवश्यकताओं तथा समस्याओं के समाधान के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हमें किस प्रकार रहनुमाई मिलती है।

सर्वसांझा एवं नवीनता भरपूर : इक्कीसवीं सदी में परमात्मा द्वारा बख़्शी बुद्धि का सदका मनुष्य ने कई अहम वैज्ञानिक आविष्कार किए हैं। इन आविष्कारों के कारण पूरब तथा पश्चिम एक दूसरे के अति निकट आ गए हैं अब बातें विश्वीकरण की हो रही हैं। यह कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में समूचे विश्व एवं ब्रह्मांड की बात की गई है। भाई गुरदास जी पहले ही श्री गुरु नानक देव जी के उपदेश को *"मारिआ सिका जगति विचि"* का दर्जा दे चुके हैं। गुरबाणी का पावन फरमान सरबत्त के भले की मांग करता हुआ सारे विश्व की बात करता है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥(पन्ना ८५३)

लोक, हलत, संसार, दुनिया, जगत, जग, सृष्टि आदि शब्दों का इस्तेमाल श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में आम मिलता है। परमात्मा-जीवात्मा का सम्बंध, मनुष्य के जीवन के सारे पक्ष, सृष्टि की रचना आदि विषय सारी मानवता के साथ सम्बंध रखते हैं। अनेक आकाश, पाताल तथा ग्रहों का बयान, प्रकृति की शक्तियों का बयान, परमात्मा की असीम शक्ति का रहस्य और मानव की इस धरती पर सिरदारी का वर्णन आधुनिक विज्ञान के समानांतर होकर भविष्य के विज्ञान की बात भी करता है। इसी लिए इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक सोच वाले मनुष्य के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब का फलसफा बिलकुल नया एवं योग्य है। यह फलसफा तर्क एवं श्रद्धा का संपूर्ण सुमेल है। नोबेल पुरस्कार विजेता पर्ल बक के शब्दों में-- "श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में एक आश्चर्यजनक नवीनता है और यह बाणी सारे संसार की सांझी है।" डॉ. टायनबी के शब्दों में-- "यह ग्रंथ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) समूची मानवता का सांझा आत्मिक खज़ाना है।" डॉ. राधा कृष्णन लिखते हैं कि "समुद्रों एवं पहाड़ों की सीमाएं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्शाए ताज़ा एवं श्रद्धा-युक्त सदीवी सच के निमंत्रण को अपने आप राह दे देंगी।" भाई वीर सिंघ परमात्मा की प्रशंसा को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का मुख्य विषय बताते हुए इसके रूहानी संगीत का ज़िक्र बड़े प्यार से अपनी रचना 'कंबदी कलाई' के प्रारंभ में करते हैं। प्रो. पूरन सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'वगदी नैं' कहते हुए इसमें बह रहे सच, संतोष तथा ज्ञान के प्रवाह को सारी दुनिया के लिए सबका सांझा बताते हैं।

इन सभी विचारों से स्पष्ट है कि श्री गुरु

***३६-बी, रतन नगर, पटियाला-१४७००१*

ग्रंथ साहिब की महत्ता इक्कीसवीं सदी के मनुष्य के लिए बिल्कुल योग्य है। इसकी महत्ता सारे संसार के लिए एक जैसी है और सारा संसार इससे मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकता है।

मातृ-भाषा, पुस्तक-सभ्याचार तथा विरासत की सुरक्षा : श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की पदवी प्राप्त है। इसकी लिखित में किसी प्रकार के परिवर्तन के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। गुरसिक्ख रोज़ाना अरदास में "अक्खर वाधा-घाटा, भुल्ल-चुक्क माफ करनी" कहते हैं। ऐसी स्थिति में गुरमुखी लिपि तथा पंजाबी भाषा दोनों ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सदका अमर एवं सुरक्षित हो गई हैं। गुरबाणी के प्रचार तथा प्रसार के लिए लिप्यांतरण एवं अनुवाद की विधियों का इस्तेमाल किया जा सकता है, मगर इसके स्वरूप तथा इसकी लिपि में किसी प्रकार के परिवर्तन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, इसलिए मातृ-भाषा पंजाबी तथा गुरमुखी लिपि के प्रेमियों को निश्चिंत हो जाना चाहिए। यहां इस बात का वर्णन भी आवश्यक है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में मातृ-भाषा तथा सभ्याचार के प्रति मनुष्य की स्वतंत्रता के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है। आज की सदी में अपनी मातृ-भाषा तथा अपना सभ्याचार छोड़कर अन्य भाषाओं एवं सभ्याचारों के प्रति रुझान के बारे में फरमान है :

--घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ (पन्ना ११९१)

--नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ (पन्ना ४७२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अलावा दसम ग्रंथ, भाई गुरदास जी की रचना, भाई नंद लाल जी की रचना, जन्म-साखियां, रहितनामे, गुरबिलास, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के टीके, शब्दार्थ, कोश, गुटके, पोथियां, सैंचियां, गुरबाणी व्याकरण आदि हमारे पास बाप-दादा के खज़ाने के रूप में हैं। कुछ लोगों का विचार है कि इक्कीसवीं सदी में कंप्यूटर तकनीक के कारण पुस्तक सभ्याचार को भारी संकट का सामना करना पड़ सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानने के हुक्म ने पुस्तक सभ्याचार को सदैव सुरक्षा प्रदान की हुई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा इसके साथ अन्य धार्मिक ग्रंथों व पुस्तकों का सदैवकालीन अस्तित्व कभी भी पुस्तक-सभ्याचार के लिए संकट खड़ा नहीं होने देगा।

प्रो. शिव जोशी के शब्दों में-- "श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भाषा लगभग पांच सौ वर्ष के भाषा विकास का सुंदर इतिहास है।" डॉ. तारन सिंघ लिखते हैं कि "श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमारी पांच सौ वर्ष की संस्कृति का आत्मिक इतिहास है।" बारहवीं सदी से लेकर सत्रहवीं सदी तक की बाणी इस पावन ग्रंथ में शामिल है।

इक्कीसवीं सदी में इतिहास, सभ्याचार, साहित्य, मनोविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के अन्वेषकों (खोजी) के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रमाणिक स्रोत है। भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त नामदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त शेख़ फरीद जी तथा अन्य भक्त साहिबान व गुरसिक्खों की बाणी एवं उनके जीवन के बारे में प्रमाणिक संकेत श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से अन्वेषकों को प्राप्त होते हैं। इतिहास, मिथिहास, साहित्य, सभ्याचार तथा विरासत की संभाल व सुरक्षा के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब दुनिया के इतिहास में सदैवकालीन दृढ़ है। मिस्टर टी. एस. ईलियट द्वारा बताया गया 'परंपरा दी पछाण' (पहचान) का सिद्धांत व्यवहारिक रूप से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मौजूद है। वेद-कतेब, उपनिषद, स्मृति-शास्त्र, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों का विवरण तथा धू (ध्रुव) प्रहलाद जैसे भक्तों का ज़िक्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विरासत के प्रति बहुमूल्य देन है। मिथिक कथाओं को बाणी में प्रतीक रूप में तथा आदर्श

रूप में बयान किया गया है :

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ (पन्ना ३३७)

भाषा विज्ञान के अन्वेषक के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब पंजाबी, सधुक्कड़ी, प्राक्रित, अपभ्रंश, बृज, अवधि, गुजराती, मराठी, बंगला, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों के लिए एक प्रमाणिक स्रोत है। साहित्य के आविष्कर्त्ताओं के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पद्य के अनेक रूप मौजूद हैं। वार, काफी, सदु, बारह माहा, छंत आदि प्रमुख लोकगीतों के रूप हैं। अलंकारों, प्रतीकों, मुहावरों एवं दृष्टांतों का इस्तेमाल आम है। राग-विद्या के आविष्कर्त्ताओं के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इकत्तीस राग मौजूद हैं।

इक्कीसवीं सदी की मुख्य समस्याओं का समाधान : चिंता आज के युग का एक ज्वलंत विषय है। इसे दूर करने के लिए लोग दवाइयों एवं नशों का सहारा ले रहे हैं। गुरबाणी के अनुसार परमात्मा को सबकी चिंता है, इसलिए मनुष्य को चिंता छोड़ देनी चाहिए। गुरबाणी का पावन फरमान है :

सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥
(पन्ना ४६७)

चिंता का मूल कारण पदार्थक उन्नति की दौड़ है। संयम, संतोष तथा सादगी का जीवन अपनाकर मनुष्य चिंता से मुक्त हो सकता है। पदार्थक उन्नति की दौड़ के कारण ही मनुष्य गलत राह अपनाता है; बेईमानी, हेराफेरी, झूठ एवं भ्रष्टाचार का सहारा लेता है; नैतिकता एवं ज़मीर की आवाज़ से दूर हो जाता है। इक्कीसवीं सदी के मनुष्य की इस अवस्था का बयान श्री गुरु ग्रंथ साहिब के इस बयान के साथ मेल खाता है :

करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥
माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥
(पन्ना ८०९)

हाथों से की गई मेहनत ही मनुष्य को वास्तविक सुख दे सकती है। किरत (श्रम) तथा कीरत (सिमरन) के सुमेल का मार्ग ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर मनुष्य सुख एवं सहज की अवस्था प्राप्त कर सकता है। नशे या दवाइयां मनुष्य को शांति नहीं दे सकतीं। नशे तो गुरबाणी अनुसार 'झूठा मद' हैं, जिससे मनुष्य का तन-मन रोगी हो जाता है। असली खुमारी (नशा) नाम की खुमारी है। गुरबाणी का पावन फरमान है :

राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥
(पन्ना ३९९)

एड्स जैसी भयानक बीमारियों से भी मनुष्य दुखी है। एड्स को 'सुरक्षित संबंधों' तथा 'सुरक्षित साधनों' के गलत नाम के तले रोकने का असफल यत्न किया जा रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में पर-नारी एवं पर-पुरुष के संबंधों को जड़ से ही रद्द किया गया है। इन संबंधों को सांप के विष के समान बताकर मानवता को चौकस किया गया है :

जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ (पन्ना ४०३)

इसी प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में गुण भरपूर राजनीति तथा समानता वाली आर्थिकता का मार्ग दर्शाया गया है। 'नाम जपो, किरत करो, वंड छको की शिक्षा इस मार्ग पर चलने का उपदेश है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्शायी गई जीवन-शैली अपनाकर मनुष्य धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन के हर क्षेत्र में संयम वाला तथा साफ-सुथरा जीवन जी सकने के योग्य है। यही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के उपदेश अनुसार श्रेष्ठ धर्म है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥(पन्ना २६६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : चिंतन

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के बाणीकार अनुभव-सिद्ध सत्य के गायक थे। उनकी साधना-पद्धति उनके स्वतंत्र और मौलिक चिंतन का परिणाम थी। परमात्मा के स्मरण के लिए किसी विशेष नाम के प्रति कोई आग्रह नहीं है। उसे वाहिगुरु, राम, हरि, गोविंद या अल्लाह किसी भी नाम से स्मरण किया जा सकता है। परमात्मा एक है और सत्य स्वरूप है। वह सभी में व्याप्त है और घट-घट में समाया हुआ है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड उसी की आरती कर रहा है। परमात्मा का दर आश्चर्यमय है, जहां सभी उसका गुणगान कर रहे हैं। वह सृजनहार, देनहार और संहारकर्त्ता स्वयं ही है। उसी का यशोगान करना चाहिए।

वाहिगुरु निरंकार है। सृष्टि की रचना उसी के स्फुरण अथवा हुक्म का परिणाम है। सृष्टि की रचना वह अपने स्वतंत्र हुक्म से करता है। सृष्टि-रचना से पूर्व वाहिगुरु सुन्न (शून्य) समाधि के रूप में था। सुन्न से अभिप्राय शक्तिमान और उसकी शक्ति की अभेद अवस्था से है। जगत रचने की इच्छा (उन्मीलन) और संहार की इच्छा वाहिगुरु की महा माया है जिसका अलग कोई अस्तित्व नहीं है। परमात्मा निर्गुण और सगुण दो छोरों के बीच केलि कर रहा है :

ईंघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥ *(पन्ना ८२७)*

जीवात्मा भी परमात्मा का रूप है। जीव अपने को भूले रहता है। उसे अपना मूल स्वरूप पहचानने की आवश्यकता है। जीवात्मा को नारी रूप में माना गया है। संसार जीवात्मा का मायका (पितृगृह या पेइआ) है जहां से उसे ससुराल (प्रभु का घर) जाना है। गुणों के उपार्जन से जीवात्मा का सम्मान होगा अन्यथा प्रियतम के दरबार में उसे रोना पड़ेगा।

जीवात्मा परमात्मा का अंश है किंतु इसमें सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक होने का गुण नहीं है। यह स्थूल तत्वों से आवृत्त है और समय तथा स्थान की दृष्टि से टिकाव की स्थिति में नहीं रहता है। जीवात्मा और हरि के बीच अहंकार का परदा है जो इसको हरि-मिलन से रोकता है।

गुरबाणी में सृष्टि के लिए जग, जगत और संसार शब्दों का प्रयोग हुआ है। जगत परमात्मा का शरीर होने के कारण सत्य है-- *"इहु जगु सचे की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥"* श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार चित्त जीव और अचित्त जड़-सृष्टि दोनों की गणना जगत में होती है। सृष्टि-रचना के लिए परमात्मा को बाहर से किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह स्वयं ही इसका निमित्त (कारण) है और स्वयं ही उपादान है।

परमात्मा को पाने का सबसे उत्तम मार्ग है-- प्रेम-भक्ति-- *"जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥"* श्री गुरु ग्रंथ साहिब में परमात्मा को निराकार माना

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६; फोन : ९४५४२-५४५९४*

गया है किंतु जगत में व्यापक होने के कारण वह सगुण भी है।

जीव के परमात्मा के प्रति प्रेम की साहित्य में चार प्रकार से अभिव्यक्ति होती है। प्रथम धारणा के अनुसार प्रभु के प्रति प्रेम मानव के प्रति प्रेम से भिन्न कोटि का है और उसकी मानवीय सम्बंधों से तुलना नहीं की जा सकती। प्रभु के प्रति इस प्रकार के प्रेम का वर्णन ईसाई धर्म में हुआ है। द्वितीय धारणा के अनुसार प्रभु के प्रति प्रेम मानव-प्रेम से भिन्न कोटि का तो है किंतु उसकी अभिव्यक्ति के लिए मानव सम्बंधों का सहारा लिया जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसी पद्धति का अनुसरण किया गया है। इसमें जीवात्मा को सुहागिन या धन कहा गया है और परमात्मा को साजन या पिर कहा गया है।

परमात्मा के प्रति प्रेम के अन्य वर्ग के साहित्य में प्रभु-प्रेम को मानव-प्रेम के समतुल्य मानकर भक्त अपने राग की अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार की रचनाओं में आराध्य की प्रेम लीलाओं की चर्चा होती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रेम नाम-भक्ति का आधार है, अत: *"वीआहु होआ मेरे बाबुला"* के बाद अविनाशी वर-प्राप्ति का वर्णन किया गया है अथवा किरण के ज्योति में मिलने और बूंद के सागर में मिलकर *". . जल का जलु हूआ राम ॥"* का दर्शन होता है। प्रेम का आदर्श जल और कमल, मछली और नीर, चातक और स्वाति बूंद, दूध और जल, चकवी और सूर्य के समान समर्पण तथा त्याग की मांग करता है। भक्त नामदेव जी भी इसी आदर्श प्रेम की कामना आराध्य विट्ठल (प्रभु) के लिए करते हैं। भक्त रविदास जी प्रभु से अपने सम्बंधों की व्याख्या करते हुए प्रेम निर्वाह का प्रण करते हैं : *"माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥"* भक्त रविदास जी को यह भरोसा है कि कोई भगवान को उनसे दूर नहीं कर सकता, क्योंकि भक्त का भगवान के प्रति प्रेम का बंधन भगवान को मज़बूती के साथ भक्त के साथ बांधे हुए है। भक्त तो भगवान के साथ भक्ति या आराधना करके मोह के बंधन से छूट जाएगा किंतु भगवान के लिए प्रेम-बंधन तोड़ना बहुत कठिन है। प्रभु की शरण में आने पर सब कुछ अच्छा लगता है और सभी सुखों की प्राप्ति होती है। प्रभु के आनंदमय प्रेम की दशा वर्णनातीत है।

दाम्पत्य भाव में जीवात्मा अपने ठाकुर की चेरी है। उसमें आलस्य और प्रमाद भी है-- *"सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥"* जीवात्मा नैतिक गुणों को धारण करने से प्रभु की प्रिय बन सकती है। अच्छा आचरण करने पर प्रियतम का दर्शन अवश्य होगा।

परमात्मा की भक्ति में नाम का विशेष महत्त्व है। संसार में अमृत वस्तु केवल एक है दूसरी नहीं। यह अमृत प्रभु का नाम है। यह अमृत मन में है। जिनके भाग्य में है वही इसका पान करते हैं। जिस प्रकार लकड़ी तथा पत्थर आदि में अग्नि दिखाई नहीं देती परंतु खास तरीके से उसको उत्पन्न किया जाता है, इसी प्रकार नाम-रस शरीर के अंदर लुप्त है जो गुरमति विधि से प्रकट होता है। गुरु का नाम सभी विष निकालने में समर्थ है। गुरमति का अनुसरण करने से नाम-रस की प्राप्ति होती है।

गुरमति में नाम और सत अभेद हैं। नाम से अभिप्राय, सत्य स्वरूप परमात्मा से है जो सब में ओत-प्रोत है-- *"नाम के धारे सगले जंत ॥"* परमेश्वर के नाम से अभिप्राय उसके नाम का, गुणों का ध्यान करके अभ्यास करने से है, जिससे अंत:करण की शुद्धि और नाम की प्राप्ति

होती है। जिह्वा के उच्चारण से लेकर नामी की अभेदता तक पूरे अभ्यास को नाम कहा जाता है।*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब कोश, कृत भाई वीर सिंघ)*

नाम की कमाई के लिए आचरण की शुद्धता आवश्यक है। परमात्मा सभी गुणों का पारखी है। उसकी कृपा के लिए ठोस नैतिक जीवन की आवश्यकता है। प्रभु की प्रसन्नता के उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिए किए गए सभी प्रयत्न 'नाम' कहलाते हैं। इस प्रकार 'नाम' जीभ से परमात्मा का नाम रटना-मात्र नहीं है अपितु उसके साक्षात्कार से आदर्श जीवन व्यतीत करना है। निराकार से तादात्म्य 'नाम' से ही होता है जो साधना की दृष्टि से एक ऊंचा स्तर है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रभु-प्रेम (भक्ति) का बीज 'नाम' है और उसका फल सहज है। इस प्रकार नाम, भक्ति और सहज एक दूसरे से समबद्ध हैं। सहज से अभिप्राय आत्मा की उस अवस्था से है जब वह माया के प्रभाव से मुक्त होकर अपने वास्तविक स्वभाव में प्रकाशित होती है। इस प्रकार सहज सत, रज और तम से ऊपर की अवस्था है। गुरु साहिबान के अनुसार सहज अवस्था मोक्ष पद, जीवन-मुक्त अवस्था निर्वाण पद की परिचायक है। सिद्धों की सहज योग की विचारधारा का खंडन गुरबाणी में किया गया है।

सहज की प्राप्ति में सद्गुरु सहायक होते हैं। वे संशय (सहसा)-निवारण से हृदय में रखे रत्न से पहचान करा देते हैं। सहज के लिए मन की निर्मलता और सतसंग आवश्यक है। सतसंग से चित्त-वृत्ति शांत होती है तथा मन सहज समाधि में स्थित हो जाता है। नित्य कर्म करते हुए भी मन प्रभु में लगा रहने से सहज आनंद की प्राप्ति होती है। हे जीव! तू सहज रूप से कमाते और उद्यम करते हुए प्रभु का ध्यान कर। इससे तेरा प्रभु से मिलन होगा और तेरी चिंता का नाश होगा :

उदमु करेदिआ जीऊ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभु मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

श्री गुरु नानक देव जी ने सहज मार्ग का प्रतिपादन किया। नारी को उचित सम्मान देते हुए नारी की भर्त्सना करने वालों से असहमति व्यक्त की। आत्म-विकास का सम्बंध समाज से जोड़ा। व्यक्तिगत नाम-सिमरन की अपेक्षा सतसंग में हरि-सिमरन को महत्त्व दिया। सिमरन के साथ सेवा भी अनिवार्य है। निरंजन के साथ चित्त जोड़कर कठिन परिश्रम की कमाई और उसमें से निर्धन-सेवा में व्यय, यही जीवन को सफल बनाने की युक्ति है :

विचि दुनीआ सेवा कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ *(पन्ना २६)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग और छंद : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संपूर्ण बाणी १४३० पन्नों में दर्ज है। इसके वर्गीकरण के तीन आधार हैं-- राग, उच्चारणकर्त्ता और छंद। श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी का रागों में विभाजन किया है। रागों की कुल संख्या ३१ है। रागों में बाणी का क्रम छंदों से है। फिर छंदों में बाणी उच्चारणकर्त्ताओं के क्रम में रखी गई है। इस प्रकार राग को वर्गीकरण का मूल आधार माना गया है। रागों में छंदों की व्यवस्था दूसरा आधार है और छंदों में छ: गुरु साहिबान की बाणी तीसरा आधार है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संगीत (राग) और पद्य रूप का समन्वय है जिससे पाठक (साधक) की बुद्धि और हृदय दोनों एक साथ रसमय होकर आनंदमय हो सकें। श्री गुरु ग्रंथ साहिब

में संगीत के तीन अंगों में राग तथा वाद्य को अपनाया गया है और नृत्य को छोड़ दिया गया है। इस प्रकार ६ बड़े रागों में केवल सिरी तथा भैरउ राग को सम्मिलित किया गया है तथा दीपक, हिंडोल, मेघ और मालकौंस का सीधा उपयोग नहीं किया गया, क्योंकि इनका सम्बंध भावों के तीव्र उन्माद से है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंत में पारंपरिक राग माला दी गई है जिसमें छ: रागों, तीस रागनियों और ४८ राग-पुत्रों का उल्लेख है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनमें से केवल २ रागों, ११ रागनियों और ९ राग-पुत्रों का उपयोग किया गया है। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब के ३१ रागों में २२ राग रागमाला सूची से हैं, शेष राग देशी अथवा मिश्रित हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में रागों का क्रम इस प्रकार रखा गया है कि पूरा पावन ग्रंथ एक ही रहस्यात्मक अनुभव या भगवद् साक्षात्कार का प्रकटीकरण प्रतीत होता है। प्रत्येक राग भगवद् साक्षात्कार की उस मंज़िल की एक कड़ी है जो परमात्मा की सिफत-सालाह के द्वारा साधक को आत्मिक विकास की ओर एक निश्चित बिंदु तक ले जाती है। फिर अगला राग कुछ और शाश्वत मूल्यों की व्याख्या करके उससे और आगे ऊंचे धरातल पर पहुंचा देता है। साधक का हृदय राग में तल्लीन होकर आध्यात्मिक रस से एकरस हो जाता है। वह अहं-त्याग की मंज़िलों से गुजरता हुआ परमात्मा से एकरूप हो जाता है।

समय के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आरंभ संध्या के समय गाये जाने वाले सिरी राग से होता है। पूर्वार्द्ध में १३ राग हैं, जिनमें सिरी राग का वर्चस्व है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सबसे विस्तृत राग गउड़ी भी सिरी राग की रागिनी है। पूर्वार्द्ध में १३ रागों का क्रम इस प्रकार है-- सिरी, माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, देवगंधारी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोडी और बैराड़ी।

राग आसा में प्रभु के दर के दर्शन होते हैं। राग सोरठि में गुरु की कृपा होती है। राग धनासरी में ब्रह्मांड द्वारा प्रभु की आरती का चित्र है। इस प्रकार सिरी राग के बाद प्रत्येक राग लोक-भाषा के प्रतीकों के माध्यम से वियोग और चिंतन के कई चित्र प्रस्तुत करता है। साधक पूर्वार्द्ध की समाप्ति पर बैराड़ी राग में विश्राम की अवस्था में पहुंच जाता है। बैराड़ी राग का रूप है गहने से लदे होना। तब जिज्ञासु की झोली में गुरु की बरकत पड़ती है। जीवात्मा हरि-नाम की मंज़िल पर पहुंचकर हरि-यश गाने की स्थिति में पहुंच जाती है :

संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥
कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥ रहाउ ॥
जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥
करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥१॥
सरब सूख हरि नामि वडाई ॥
गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥२॥ (पन्ना ७२०)

उत्तरार्द्ध में प्रेम-भक्ति की मंज़िल आरंभ होती है। राग तिलंग में फारसी भाषा के नए स्वर में प्रभु से प्रार्थना की गई है। अगले राग सूही में जीवात्मा के सोहागिन रूप में प्रभु-मिलन के चित्र हैं। प्रेम-भक्ति में माया को हटाकर प्रेम से जीवन सराबोर करने का संदेश है :

जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥
(पन्ना ७२२)

राग रामकली में अनंदु साहिब बाणी में सतिगुरु के मिलन का आनंद है। तुखारी और बसंत राग में छंदों और शबदों के माध्यम से प्रकृति और मानव एकाकार हो गए हैं। राग

बसंत में सब रोग-शोक मिट गए हैं, करम (प्रभु-कृपा) का पेड़ विकसित हो गया है, शाखा हरी हो गई है, धर्म का फूल खिल गया है और ज्ञान का फल लग गया है। प्रभु-प्राप्ति के पत्ते हैं, अहंकार रहित स्थिति घनी छाया है :

करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥
(पन्ना ११६८)

राग बसंत में चारों ओर उल्लास छा गया है। वातावरण में उत्साह की नवीन लहर है। मलार में शीतल पवन बहती है। गुरु-उपदेश की मेघ के रूप में अमृत-वर्षा होती है, जिससे जीवात्मा हरि-रस में लीन होती है :

अंम्रित बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥ *(पन्ना १२५४)*

साधना के अंत में प्रभु की बख़्शिश से प्रभात हो गई। सभी जीवों में परमात्मा का प्रकाश अनुभव होता है-- *"एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥"* आदर्श मानव सत्य स्वरूप परमात्मा में लीन हो जाते हैं। वे प्रभु से एकाकार हो जाते हैं।

उत्तरार्द्ध में प्रयुक्त अठारह राग क्रम से इस प्रकार हैं-- तिलंग, सूही, बिलावल, गोंड, रामकली, नट नाराइण, माली गउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार, कानड़ा, कलिआण, प्रभाती और जैजावंती।

रागों की दृष्टि से श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी की बाणी एक वर्ग में है जो क्रमशः १९ और १७ रागों में है। श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी दूसरे वर्ग में है जो क्रमशः २९ और ३० रागों के अंतर्गत है। रागों के अंतर्गत कुल बाणी १३३८ पन्नों में है जिसका ९० प्रतिशत भाग उन १७ रागों का है, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी एवं श्री गुरु अमरदास जी की बाणी सम्मिलित है। विस्तार के क्रम से इन १७ रागों के नाम निम्न प्रकार हैं-- गउड़ी, आसा, मारू, रामकली, सिरी, सूही, सोरठि, बिलावल, सारंग, माझ, भैरउ, मलार, गूजरी, वडहंस, धनासरी, बसंत और प्रभाती। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी उक्त १७ रागों के अतिरिक्त राग तिलंग तथा राग तुखारी में भी है।

रागों में गाये पद को शबद की संज्ञा दी गई है। राग की तीन अवस्थाएं मानी गई हैं-- नाद, लय और शबद। राग की सबसे उच्च अवस्था नाद या ध्वनि है। दूसरी अवस्था लय या ताल है और तीसरी अवस्था शबदों में प्रकट होने की है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग की इन तीन अवस्थाओं की एक बंदिश (समन्वय) की गई है, जिससे बुद्धि और हृदय दोनों प्रभावित होते हैं।

संगीतज्ञों के अनुसार शबद या प्रबंध में पांच अंग होते हैं जिनको उदग्राह, मेलापक, ध्रुपद, अंतरा और आभोग कहते हैं।

उद्ग्राह में विषय का उत्थान किया जाता है। मेलापक में लिए गए विषय को ध्रुपद या टेक से मिलाया जाता है। ध्रुपद या टेक स्थायी भाव रखती है और उसे बार-बार दोहराया जाता है। अंतरा में विषय का विस्तार होता है। आभोग पूरी रचना का परिचायक है। उसी में रचयिता का नाम भी होता है। हिंदी में गेय पदों के चार अंगों का क्रम स्थायी, अंतरा, संचारी और आभोग कहा जा सकता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शबदों में चार अंग हैं। इसमें आरंभ में उदग्राह या सामान्य कथन है। स्थायी या ध्रुपद के लिए 'रहाउ' शबद का प्रयोग किया गया है। फिर अंतरा में दृष्टांत है और आभोग में विचार का संतुलन है। ध्रुपदों में टेक, अंतरा और आभोग है। चौपदों में

उदग्राह, रहाउ, अंतरा और आभोग चारों अंग हैं। असटपदियों में अंतरा में कुछ में केवल एक ही भाव का विस्तार है और कुछ में दो या तीन विषयों को लिया गया है।

रागों में पहले शबदों को ही उच्चारणकर्त्ता-क्रम से दिया गया है। प्रत्येक गुरु साहिब ने शबद के अंत में 'नानक' शब्द दिया है। शबदों के आरंभ में शबद किस गुरु द्वारा रचित है, यह दर्शाने के लिए महला १ या महला २ या महला ३ आदि अंकित है। इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के शबद पहले दिए गए हैं और उन पर 'महला १' दिया है। श्री गुरु अंगद देव जी के शबद नहीं सलोक हैं। फिर श्री गुरु अमरदास जी के शबद 'महला ३' में दिए गए हैं। महला का अंकन संख्या में है किंतु उसे पहला, दूसरा या तीसरा के रूप में पढ़ते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में असटपदियों को अलग इकाई मानकर शबदों के बाद दिया गया है। असटपदियां विचार प्रधान हैं। नाम-महिमा, सहज योग और भगवद्-प्रेम असटपदियों का मुख्य विषय है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित असटपदियों की संख्या ३१० है, जिनमें ११९ श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित हैं।

असटपदी में यह आवश्यक नहीं कि आठ ही पद हों। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चरित राग सूही में एक असटपदी में दो पंक्तियों के ३४ पद हैं। इस प्रकार यह असटपदी लगभग दो पन्नों में एक स्वतंत्र बाणी के रूप में है। श्री गुरु रामदास जी की राग सूही में एक असटपदी में ३२ पद हैं। इस असटपदी में ५ इकाई हैं। प्रथम चार में छः-छः पंक्ति के बाद और अंतिम में आठ पंक्ति के बाद 'नानक' शबद का प्रयोग हुआ है। इस असटपदी में गुरु-दर्शन उत्कंठा का सुंदर चित्रण पंजाबी भाषा में है।

असटपदी के पदों में पंक्तियों का आकार और संख्या भी अलग-अलग है। यदि पंक्ति में दोहे के समान २४ या अधिक मात्राएं हैं तो असटपदियों के प्रत्येक पद दो या तीन पंक्ति के हैं। अपवादस्वरूप पंक्ति की संख्या एक या चार भी है। यदि पंक्ति में चौपई के समान १६ मात्राएं हैं तो पंक्तियों में प्रायः चार चरण हैं। कुछ असटपदियों के पदों में दो या तीन चरण हैं। चौपई के समान चरण वाली असटपदी प्रायः सरल भाषा में राग गउड़ी और राग भैरउ में है, जबकि दोहे के समान मात्रा की असटपदी सिरी राग या सोरठि राग में है और उनकी भाषा पंजाबी है। राग माझ में दो छोटी पंक्ति और एक बड़ी पंक्ति के तीन पंक्ति के पदों की असटपदियां एक अलग रूप में हैं। राग माझ की असटपदियों का मुख्य विषय इस संसार को जीवात्मा का पितृ-लोक और परलोक को श्वसुर-लोक मानकर शुभ कार्य करना है। राग माझ की ३९ असटपदियों में से ३३ असटपदियां श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चरित हैं।

राग माझ की असटपदियों की शैली को राग मारू के सोलह छंद में अपनाया गया है। सोलहे केवल इसी राग में हैं। सोलहे में सृष्टि-रचना और प्रभु के अकथ्य स्वरूप का वर्णन विशेष रूप से किया गया है।

शबदों और असटपदियों के बाद रागमयी बाणी में संगीत की दृष्टि से छंदों का विशेष महत्त्व है। छंद एक प्रकार के लोकगीत हैं जिनका उपयोग गुरु साहिबान ने जीवात्मा के उद्बोधन के लिए किया है। छंदों के तीन विशिष्ट रूप-- पहरे, अलाहणीआं और घोड़ीआं हैं। पहरे बाणी में मानव जीवन की चार

अवस्थाओं की तुलना दिन के चार प्रहरों से करके भक्ति के लिए सचेत किया जाता है। अलाहणीआं मृत्यु के समय के शोक गीत हैं। गुरु साहिबान ने राग वडहंस में अलाहणीआं बाणी को आध्यात्मिक रंग दिया है। घोड़ीआं शादी के समय का मंगल गीत है जो दूल्हे के घोड़ी पर सवारी के समय गाया जाता है। गुरु साहिबान ने मानव शरीर को घोड़ी मानकर मन द्वारा इसके नियंत्रण को घोड़ीआं बाणी का विषय बनाया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ४ पहरे, ९ अलाहणीआं और २ घोड़ीआं को मिलाकर कुल छंद संख्या १६१ है। इनमें से राग आसा, राग सूही और राग वडहंस में छंद संख्या ९० है, शेष ७१ छंद ११ रागों में हैं।

छंदों में प्राय: चार या पांच पद होते हैं। प्रत्येक पद की पांच या छ: पंक्तियों में लयात्मक प्रवाह होता है। दूसरी पंक्ति के आधे भाग को तीसरी पंक्ति में दोहराया जाता है और अंतिम पंक्ति में पहली के आधे भाग को दोहरा कर पुष्टि की जाती है। छंदों की इस योजना से संगीत के प्रभाव में वृद्धि होती है। छंदों में एक भाव का क्रमिक विकास होता है जैसे जीवात्मा-परमात्मा के मिलन का छंद, पहरे आदि अथवा अलग-अलग दृष्टांतों से विषय समझाया जाता है, जैसे हिरन, भ्रमण और मन के प्रतीक का छंद।

चार से अधिक पदों वाले छंदों में राग तुखारी में अंकित श्री गुरु नानक देव जी की बाणी 'बारह माहा' का छंद उल्लेखनीय है, जिसमें १७ पद हैं। इसी प्रकार राग आसा में श्री गुरु अमरदास जी के मन को संबोधित छंद में १० पद हैं।

गुरमति में संगीत से अभिप्राय प्रभु-कीर्तन या हरि-कीर्ति से है। यदि पांच ज्ञानेंद्रियों, मन और बुद्धि इन सात स्वरों को मिलाकर आलाप किया जाये और ऐसा कीर्तन एक क्षण भी हो जाए तथा कीर्तन करने एवं सुनने में मन जुड़ जाए तो जन्म-जन्मांतरों के बंधन टूट जाते हैं :

निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥ *(पन्ना ७४७)*

आध्यात्मिक संगीत से प्राप्त एकाग्रता से साधक सहज अवस्था को प्राप्त कर लेता है :

राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ *(पन्ना ८४९)*

सलोक और पउड़ी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शबद और छंदों का परिचय राग विवेचन के अंतर्गत दिया गया है। अब नीतिपरक छंदों, सलोक और पउड़ी के अंतर्गत बाणी का विवरण गेय छंदों से अलग दिया जा रहा है।

'वार' पंजाबी भाषा में लोकगीत है, जो पउड़ी छंद में लिखी जाती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'वार' का उपयोग राजाओं के यशगान की अपेक्षा परमात्मा के गुणगान के लिए किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल २२ वारें हैं जो महत्त्वपूर्ण रागों में संकलित हैं। आरंभ में वार में केवल पउड़ी छंद ही थे किंतु श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रत्येक पउड़ी के साथ भाव साम्य रखते हुए एक-दो सलोक भी सम्बद्ध कर दिए। इस प्रकार वारों की ४६० पउड़ी छंदों के साथ ६६२ सलोक सम्बद्ध हैं। २२ में से २० वारों के साथ सलोक हैं। राग बसंत में एक वार में मात्र ३ पउड़ी हैं तथा राग रामकली में भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी की वार में ८ पउड़ी हैं। इनके साथ सलोक नहीं दिए गए हैं।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित ३ वारें (राग आसा, माझ और मलार में) हैं। श्री गुरु अमरदास जी की ४ वारें (राग गूजरी,

सूही, रामकली और मारू में) हैं। श्री गुरु रामदास जी की ८ वारें (राग सिरी, गउड़ी, गूजरी, बिहागड़ा, सोरठि, वडहंस, बिलावल और सारंग राग में) हैं। श्री गुरु अरजन देव जी की वारें राग गउड़ी, गूजरी, जैतसरी, रामकली, मारू और बसंत राग में हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सभी वारों में आसा राग में संकलित श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वार का विशेष महत्त्व है। इस वार में २४ पउड़ी और ५९ सलोक हैं। सलोकों में ४४ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के तथा शेष १५ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के हैं। इसकी २४ पउड़ियों के साथ भाव समानता के शबदों का गायन होता है। राग आसा में ही श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चरित छ: छंदों के २४ पदों की प्रत्येक पउड़ी के साथ एक-एक पद को पढ़कर दैवीय प्रेम के संगीत की अद्‌भुत धारा तरंगित की जाती है।

वारों के अतिरिक्त पउड़ी छंद का उपयोग कुछ लंबी बाणियों में हुआ है जिनमें राग रामकली में संकलित 'ओअंकार' तथा 'सिध गोसटि' बाणी है। 'ओअंकार' बाणी वर्णमाला क्रम में पउड़ी छंद में है। 'सिध गोसटि' बाणी प्रश्नोत्तर शैली में सिद्धों के साथ नाम-साधना पर हुई गोष्ठि के रूप में है। इसमें गुरमुख के लक्षण भी दिए गए हैं।

राग रामकली में ही तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी की बाणी 'अनंदु' है। इसकी प्रत्येक पउड़ी में प्रथम पंक्ति के उत्तरार्द्ध को दूसरी पंक्ति में दुहराया गया है और अंतिम पंक्ति में प्रथम पंक्ति की पुष्टि की गई है। इस बाणी की ४० पउड़ियों में गुरमति-दर्शन का सार-संक्षेप समा गया है। प्रभु-मिलन का आनंद, सतिगुरु की प्राप्ति, गुरबाणी की महत्ता, नाम-साधना की विधि, मन प्रबोध, सहज स्थिति प्रत्येक विषय को बहुत ही प्रवाहमय ढंग से इस बाणी में स्पर्श किया गया है। इस बाणी की ४०वीं पउड़ी में बाणी की प्रशस्ति मात्र नहीं बल्कि साधक की निष्ठा का आह्वान है, जिसको प्रभु की प्राप्ति हो गई है और सभी दुख दूर हो गए हैं।

राग गउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित बावन अखरी बाणी भी पउड़ी छंद में है। इस बाणी के आरंभ और अंत में गुरदेव वंदना का सलोक, तब ५५ पउड़ियों में ५२ (बावन) अखरी बाणी है। प्रत्येक पउड़ी के साथ एक-एक सलोक भी है। सलोक के भाव की व्याख्या पउड़ी में की गई है।

राग माझ में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित 'बारह माहा' बाणी में १० पंक्ति के पउड़ी छंद का प्रयोग हुआ है। पहली पउड़ी में नाम के द्वारा प्रभु-मिलन की याचना है। फिर १२वीं पउड़ी में महीनों के क्रम से प्रभु के विरह में जीवात्मा की दशा का वर्णन है। ऋतु-परिवर्तन के साथ जीवात्मा की दशा भी बदलती है। आषाढ़ के तपने के बाद सावन में हरि-नाम-बूंद की तृष्णा उत्पन्न होती है जो भादों के भुलावे में खो जाती है। आश्विन में पुन: उत्कंठा जागृत होती है। कार्तिक में शुभ कर्मों का योग होता है, जिससे प्रभु से समीपता बढ़ती है। जीवात्मा गुरु की शरण लेकर प्रभु-कृपा प्राप्त करती है। अंत में प्रभु की प्रेम-भक्ति से उसका जीवन सफल हो जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शबदों के बाद सलोकों की संख्या सबसे अधिक है। राग बाणी में सलोक पउड़ी छंदों के साथ दिए गए हैं। श्री गुरु अंगद देव जी की संपूर्ण बाणी ६३ सलोकों में है। ये सलोक पउड़ी छंदों के साथ दिए गए

हैं। अन्य गुरु साहिबान में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी के सलोक वारों के साथ दिए गए हैं तथा जो सलोक बच गए हैं वे 'वारां ते वधीक' शीर्षक के अंतर्गत रागबद्ध बाणी के बाद दिए गए हैं। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित 'सहसक्रिती सलोक' तथा प्राकृत में उच्चरित 'गाथा' भी रागबद्ध बाणी के बाद संकलित है। 'सहसक्रिती' और 'गाथा' के बाद भक्त कबीर जी और भक्त शेख़ फरीद जी के सलोक उसी खंड में अंकित हैं। सबसे अंत में 'वारां ते वधीक' के अंतर्गत नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सलोक अंकित हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सलोकों को ३ भागों में बांट सकते हैं। दो पंक्ति के सलोक एक उक्ति के रूप में हैं। दो से अधिक पंक्तियों के कुछ सलोकों में एक ही विषय का सामान्य कथन है और कुछ सलोकों में चौपई के मात्रिक छंद को लेकर उक्ति भिन्नता से विषय निरूपण है। राग रामकली में चौपई शैली के सलोक में कर्मकांड की अपेक्षा शुभ कर्मों पर बल दिए जाने सम्बंधी सलोक पांच चौपई छंदों में हैं। राग माझ में भगवान के दरबार में नाम-सिमरन से सम्बंध जुड़ता है। *"पुतीं गंढु पवै संसारि"* के समकक्ष आठ-नौ सांसारिक उदाहरण रखे गए हैं। इस सलोक में १४ चरण या ७ अर्धाली हैं। राग मलार के एक सलोक के आठ चरणों में पूरी रहस्यात्मक अनुभूति सूत्र रूप में दी गई है-- *"अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥"* यदि आत्म-रस का भोग कर सको तो बहिर्मुखी वृत्तियां बंद होती हैं। राग रामकली में *"नानक दुखीआ सभु संसारु"* सलोक में २२ चरण हैं।

श्री गुरु अंगद देव जी के दो पंक्ति के सलोक समास शैली में हैं। कुछ सलोक विषय निरूपण के लिए दो से अधिक पंक्ति में हैं।

श्री गुरु अमरदास जी के सलोकों की संख्या ४०० से अधिक है। उनके अधिकांश सलोक दो से अधिक पंक्ति के हैं। उनके सती-प्रथा-त्याग सम्बंधी सलोक भावपूर्ण हैं।

श्री गुरु रामदास जी ने गुरु-महिमा और सिक्ख आचरण पर अच्छे सलोक लिखे हैं। *"गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए"* में एक शबद की भांति गुरसिक्ख के आचरण का विवेचन मिलता है।

श्री गुरु अरजन देव जी के सलोकों में भाषा और भावों की विविधता है। उन्होंने अपने एक सलोक को राग मारू के आरंभ में दिया है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सलोक सरल ब्रज भाषा में वैराग्यमयी भावना से पूर्ण हैं। उन्होंने अपने सलोकों में ज्ञानी पुरुष के लक्षण बहुत ही सरल और मार्मिक रूप में दिए हैं।

(सधन्यवाद 'सचखंड पत्र')



श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार क्षमा : श्रेष्ठता का मूल

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

क्षमा का अर्थ है-- दंड देने की सामर्थ्य और क्षमता होते हुए भी अपने प्रति किए गए अपराध को विस्मृत कर देना और कारण तथा अवसर उपस्थित होते हुए भी अपराधी का अहित न करना। अपने को कष्ट या दुख देने वाले को बदले में पीड़ा पहुंचाना मनुष्य ही नहीं सभी प्राणियों की मूल प्रवृत्ति है। ऐसी अति स्वाभाविक प्रवृत्ति का स्वेच्छा से त्याग कर देना सचमुच मानवता की पराकाष्ठा है।

यही कारण है कि मानवता के प्रकाश-स्तंभ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में क्षमा के सिद्धांत को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। गुरबाणी के अनुसार क्षमा सभी प्रकार की श्रेष्ठता, उत्कृष्टता और उच्चता का मूल है :

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥
(पन्ना १३७२)

गुरबाणी का फरमान है कि क्षमा तन-मन का शृंगार है और क्षमाशील प्राणी से प्रभु अत्यंत प्रेम करता है :

खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ (पन्ना ३५९)

श्री गुरु रामदास जी का फरमान है :

खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ (पन्ना ८३६)

अर्थात् जो आत्मा रूपी स्त्री क्षमा का शृंगार करती है, प्रभु रूपी पति उस पर अत्यंत प्रसन्न रहते हैं और उस पर स्नेह का भाव रखते हैं। वस्तुत: गुरु साहिबान ने क्षमा के गुण को प्रभु-प्रेम की प्राप्ति के लिए मूल आधार माना है।

क्षमा : समस्त गुणों की खान : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में क्षमा को समस्त गुणों का मूल स्वीकार किया गया है। क्षमा कर देने मात्र से अहंकार, क्रोध, लोभ, काम, वैर-विरोध, ईर्ष्या, निंदा, दुर्मति, कृतघ्नता आदि अवगुण नष्ट हो जाते हैं और इनका स्थान विनम्रता, सहनशीलता, धैर्य, संतोष, त्याग, प्रेम, दया, विवेक, कृतज्ञता आदि ले लेते हैं। क्षमा वही कर सकता है जिसमें उपर्युक्त वर्णित अवगुणों का अभाव हो और उनके स्थान पर उसके हृदय में उपर्युक्त वर्णित सद्गुणों का वास हो। वास्तव में क्षमाशील व्यक्ति समस्त अवगुणों से रहित और समस्त सद्गुणों से युक्त होता है।

अहंकार-हउमै नहीं, विनम्रता : अहंकारी व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर सकता। क्षमा करने के लिए शुद्ध विनम्रता की आवश्यकता होती है। यही विनम्रता मनुष्य को प्रभु के निकट ले जाती है। पंचम पातशाह फरमान करते हैं :

जब इहु मन महि करत गुमाना ॥
तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥
जब इहु हूआ सगल की रीना ॥
ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥ (पन्ना २३५)

क्रोध नहीं, सहनशीलता एवं धैर्य : क्षमा वहीं उपस्थित होती है जहां क्रोध नहीं, सहनशीलता

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

और धैर्य हो। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है कि जहां रोष एवं क्षोभ के स्थान पर सहनशीलता और धीरज होता है वहीं अकाल पुरख की नदरि (कृपा) होती है :

रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥
होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥
(पन्ना २५९)

लोभ नहीं, संतोष-सब्र : लोभी व्यक्ति में भी क्षमा का उद्भव नहीं हो सकता। वह तो दूसरों का जैसे-तैसे फायदा उठाने के चक्कर में रहेगा। जिसमें सब्र और संतोष हो वही सारे लालच को छोड़ क्षमा कर सकता है। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि क्षमा से शील-संतोष की उत्पत्ति होती है और रोग-यम जैसे दोष नहीं व्यापते :

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ (पन्ना २२३)

काम वासना नहीं, त्याग : वासना में लिप्त व्यक्ति भी क्षमा करने का साहस नहीं जुटा सकता। जो अपने हितों का त्याग कर सके वही दूसरे को क्षमा कर सकता है। पंचम पातशाह का स्पष्ट हुक्म है कि सकल काम का त्याग करो तभी प्रभु से निकटता प्राप्त हो सकती है :

राम राम बोलि राम राम ॥
तिआगहु मन के सगल काम ॥ (पन्ना ११८२)

वैर-विरोध नहीं, समदृष्टि : क्षमा उसी हृदय में उत्पन्न होती है जहां किसी से किसी प्रकार का वैर या विरोध न हो। जो सबके प्रति समान दृष्टि रखता है वही दूसरों के अपराधों को विस्मृत कर सकता है। भक्त कबीर जी का मानना है कि जो प्राणी समदृष्टि रखता है वह स्वयं भगवान का रूप बन जाता है :

उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥
लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥ (पन्ना ११२३)

ईर्ष्या-निंदा नहीं, प्रेम और दया : ईर्ष्या और निंदा भी क्षमाशीलता के मार्ग की बड़ी बाधाएं हैं। गुरबाणी में इसी लिए ईर्ष्या-निंदा को त्यागकर प्रेम और दया अपनाने की शिक्षा दी गई है :

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ . . .
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

दुर्मति नहीं, विवेक बुद्धि : दुर्मति भी क्षमा का भाव उत्पन्न नहीं होने देती। दूसरे का बुरा चाहने से अपना भला कभी नहीं होता। प्रथम पातशाह फरमान करते हैं :

बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ (पन्ना १३२५)

कृतघ्नता नहीं, कृतज्ञता : किसी के किए हुए उपकार को मानना कृतज्ञता और न मानना कृतघ्नता कहलाता है। कृतघ्न व्यक्ति से क्षमा जैसे गुण का कोई भी संबंध नहीं स्थापित किया जा सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी *"अकिरतघणै कउ रखै न कोई . ."* कहकर ऐसे व्यक्ति को निकृष्ट भाव से युक्त मानते हैं।

इस प्रकार क्षमा समस्त सद्गुणों का मूल है। क्षमा के भाव को तभी अपनाया जा सकता है जब उपर्युक्त वर्णित श्रेष्ठ गुणों को अपने अंदर धारण कर लिया जाये। दूसरे शब्दों में जब क्षमा आती है तो अपने साथ अनेक गुणों को भी ले आती है। इसी लिए गुरु साहिबान ने क्षमा को सारे रोगों का निवारण करने वाली औषधि माना है। श्री गुरु अमरदास जी इस सम्बंध में फरमान करते हैं :

हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझाई ॥
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥ (पन्ना २३३)

क्षमा : सत्-जनों का ख़ज़ाना : यही कारण है कि भक्त-जनों ने क्षमा को अपना सबसे बड़ा ख़ज़ाना माना है। पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि 'नाम' भक्तों की पूंजी है और क्षमाशील एवं गरीबी (नम्रता) में रहते हुए प्रभु के गुणों का जाप करना ही श्रेष्ठ है :

खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥
खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥
(पन्ना २५३)

क्षमा-हीन प्राणी की दुर्गति : क्षमा न करके व्यक्ति किसी का अहित नहीं करता बल्कि अपना ही नुकसान करता है। प्रथम पातशाह क्षमा से रहित प्राणी की दुर्दशा का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं :

खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥
(पन्ना ९३७)

क्षमा समस्त मानवीय सद्गुणों का आधार है, इसी लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में क्षमा को सभी अच्छाइयों का मूल माना गया है।

कविता

गुरु का हुक्म जो माने

*-स. सतिनाम सिंघ कोमल**

जो इन आंखों ने देखा है, नज़ारा अज़ब तेरे दर का।
निहारा श्री हरिमंदर को व जल अमृत सरोवर का।
सुन गुरबाणी मन से, उतारूं उसे दिल में,
सुकून पाता है मन जलता, फिक्र न फिर किसी डर का।
लिखी है जो गुरबाणी, सजी अब वो है साजों पर,
सुने उसको जो भी, वो ही बन जाये गुरु-घर का।
इच्छा दर्शन की लेकर, जो आते हैं करने सिजदा,
भरें झोली, बने पात्र, गुरु जी की नज़र का।
मिले तसकीन उस रूह को, सुकून मिलता सदा दिल को,
स्वाभिमान है बढ़ता व अभिमान है मरता।
लिखा जिसके नसीबों में, झुके वो ही तेरे दर पे,
लबालब है वो भर जाता, सवाली जो बने दर का।
शुक्र व सब्र में जीना, गुरबाणी यह कहती है,
तेरी रज़ा में सुखी जीए, जो एतबार है करता।
गुरु-दरबार जो आये, गुरु का हुक्म जो माने,
प्रवान है प्रभु-घर में, चेहरे पर नूर है झरता।
मेरे शब्द बौने, अकल थोड़ी, करे 'गुणवान' क्या 'कोमल'?
कृपा-पात्र बनूं उसका, सब पे कृपा है जो करता।

**२४८, अर्बन अस्टेट, लुधियाना-१४१०१०, फोन : ९८७२६-०९९२१*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अहंकार से बचने हेतु मिलते उपदेश

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार मनुष्य में बहुत प्रकार की कमज़ोरियां पाई जाती हैं। उन सब में से एक है-- अहंकार। अहंकार-- मैं हूं, मैं हूं, मैं हूं! जब तक यह 'मैं' बनी रहती है अहं-भाव बना रहता है। उतनी देर तक जन्म-मरण भी बना रहता है। अहंकार जन्म और मौत का मूल है; जन्म-मरण का कारण है। अहंकार अपने प्रभाव के कारण मित्रों को भी दुश्मन बना देता है। अहंकार के वशीभूत हो जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फंस जाने के कारण जीव अनेक प्रकार के कष्ट भोगता है। अहंकार से बचाने वाला केवल परमात्मा है। हे जीव! प्रभु का सिमरन कर :

हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥
मित्रं तजंति सत्रं द्रिड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥
(पन्ना १३५८)

श्री गुरु रामदास जी उच्चारण करते हैं कि हे मानव! तू अपने अंदर का अहं, घमंड दूर करके सदा परमात्मा का सिमरन किया कर। परमात्मा का नाम किसी भी दुनियावी पदार्थ से मोल नहीं खरीदा जा सकता। जब प्रभु किसी को नाम की दात बख़्शिश करते हैं तो उसके मन-अंतर का अहंकार खत्म हो जाता है :

अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥
(पन्ना ११११)

माया के प्रभाव के कारण जीव शारीरिक सुख की लालसा में ही वशीभूत हुआ रहता है। मैं बड़ा हूं, मैं बड़ा बन जाऊं, इसी भावना से सारे क्रिया-कलाप करता है। अहं के कारण जीव की भटकना खत्म नहीं होती। श्री गुरु रामदास जी उच्चारण करते हैं कि जब गुरु की प्राप्ति हो जाए तो अहं-भाव मिट जाता है, अहंकार का रोग खत्म हो जाता है :

हम अहंकारी अहंकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥ *(पन्ना १७२)*

जो मनुष्य अहंकारी हो जाता है वह किसी की परवाह नहीं करता। अंत समय में वह ख्वार होता है। सतिगुरु की दया से जिसका अहंकार मिट जाता है प्रभु की दरगाह में वही कबूल होता है :

किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥ (पन्ना २७८)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब उच्चारण करते हैं कि परमात्मा की भजन-बंदगी, नाम-सिमरन छोड़कर मनुष्य भांति-भांति के कर्मकांड करके मन में अहंकार करता है कि मैं धर्मी पुरुष बन गया हूं। उसके ये सारे प्रयास, किए हुए कर्म उसी तरह व्यर्थ हो जाते हैं जैसे हाथी का किया हुआ स्नान :

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥
(पन्ना १४२८)

श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि हे मनुष्य! माया मोहिनी है। इसने अपने

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

मोह में तुझे फंसाया हुआ है। तुझे अहंकार ने अपनी चपेट में ले रखा है। तू तृष्णा में भटक रहा है और अपना जन्म व्यर्थ गंवा रहा है। परलोक में जाकर तुझे पछताना पड़ेगा। कहीं इस गुमान में न रहना कि मैं बहुत समझदार हूं। गुरु की शरण में जाकर अपने अहं को त्याग कर रखना :

अहंकारु त्रिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥
(पन्ना ४४१)

श्री गुरु अरजन देव जी उच्चारण करते हैं कि अनेकों प्रकार के कर्म करके मनुष्य इन पर अहं करे तो वह जन्म-मरण में बार-बार आता है। कभी दुख और कभी सुख भोगता है :

अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ (पन्ना २७८)

श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि जो मनुष्य प्रभु को सम्मुख जानकर जीवन जीता है उसके मन में परमात्मा का नाम बसा जानो। ऐसे मनुष्य का आपा-भाव मिट जाता है, प्रभु में श्रद्धा बढ़ जाती है। वह अपने में से हउमै आदि विकार त्याग देता है और अहंकार नहीं करता :

मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥
(पन्ना १६२)

अहंकारी मनुष्य अपने आपको महान समझता है और दूसरों को तुच्छ। वह प्रत्येक को छोटा समझता है :

आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ (पन्ना ११०५)

श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि हउमै में फंसकर सारा जगत पागल हो रहा है; माया के मोह में भटक रहा है। वह अपने वास्तविक जीवन-उद्देश्य को पहचानने का यत्न नहीं करता। गुरु की शरण में रहकर माया-मोह से अलग होकर अडोल अवस्था में टिक जाता है :

हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ (पन्ना १५९)

श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि वह मनुष्य बहादुर है जिसने अपने मन से अहंकार को दूर कर, गुरु के सम्मुख हो प्रभु-नाम की सिफत-सलाह करके अपना जन्म सफल किया है। वह सदा के लिए विकारों से छूट जाता है और अपने कुल-वंश को भी मुक्त कर लेता है। प्रभु-नाम से प्यार करने वाले प्रभु की दरगाह में शोभा पाते हैं जबकि अहंकारी मनुष्य अपने ही अहंकार में जलता है, दुखी होकर मरता है :

नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥ (पन्ना ८६)

श्री गुरु अरजन देव जी उच्चारण करते हैं कि गरीबी (नम्रता) स्वभाव वाला मनुष्य अहं-भाव दूर करके, विनम्र रहकर सुखी रहता है। अभिमानी, अहंकारी मनुष्य अपने अहं में पड़कर गर्क हो जाते हैं। परमात्मा जिन पर अपनी दया-दृष्टि करते हैं वे विकारों से बचकर सुखी हो जाते हैं और परलोक में भी सुख पाते हैं :

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥
(पन्ना २७८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पेश नैतिक पक्ष

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिर्फ़ सिक्ख धर्म का ही पावन आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह तो सभी वर्गों के मनुष्यों का महान, वंदनीय, पूजनीय, प्रेरणादायक, उत्कृष्ट, विश्व का आध्यात्मिक ग्रंथ है। इसमें छ: सिक्ख गुरु साहिबान की बाणी के साथ-साथ ग्यारह भट्ट साहिबान, चार गुरसिक्ख साहिबान और पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी दर्ज है। इसमें पंजाबी भाषा के साथ-साथ हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, गुजराती, सिंधी तथा बृज भाषाओं का उपयोग किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन के प्रत्येक पक्ष को पेश किया गया है और सच, परम सच, नैतिकता, सदाचार पर बहुत ज़ोर दिया गया है। इन गुणों को धारण किए बिना किसी भी मनुष्य का जीवन सफल नहीं हो सकता। सत्तासीन शासकों को भी सच को अपनाने का उपदेश, आदेश दिया गया है :

जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥
एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥

(पन्ना १०८८)

अर्थात् जिन्होंने सच को पहचान (अपना) लिया, वही सच्चे (सही) शासक होते हैं। अगर शासक सच्चाई पर चलें, तो सब लड़ाई-झगड़े, हेर-फेर (हिराफेरी) खत्म हो जाएं।

सच तो सभी मनुष्यों के लिए उत्तम औषधि (साधन) है, जो पापों में से निकालकर आचरण को निर्मल (शुद्ध) कर देती है। इस संदर्भ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है :

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥

(पन्ना ४६८)

सच बोलना ही धर्म होता है। झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए :

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥

(पन्ना ४८८)

सच्चाई पर चलते हुए यदि मानव अपने बोल-चाल में मधुरता ले आए तो सोने पर सुहागा जैसी बात हो जाती है। इससे नम्रता का महान् गुण पैदा हो जाता है तथा अहं, क्रोध जैसे दोष, विकार दूर रहते हैं। अहं (हउमै) से ग्रस्त मनुष्य प्रकृति से दूर होता चला जाता है। समाज उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगता है। उसका सम्मान कम हो जाता है। वह अपने अलावा बाकी सभी को तुच्छ समझता है, हेय दृष्टि से देखता है। खुद को श्रेष्ठ व समझदार समझता है। ऐसे अहंकारी इंसान की दुर्गति होती है। गुरु साहिबान सदैव मीठा बोलने का तथा नम्र रहने का उपदेश देते हैं :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥

(पन्ना ४७०)

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥

(पन्ना १३८४)

किसी को बुरा नहीं कहना चाहिए। सभी का मालिक, स्वामी एक है :

मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥

(पन्ना १२३८)

धन-दौलत को गुरु साहिब नागिन एवं ठगिनी कहकर तिरस्कृत करते हैं। माना कि नित्यप्रति की आवश्यकताओं के लिए धन का महत्त्व है, किंतु जब इंसान लोभ-लालच में फंसकर ज़रूरत से ज्यादा धन इकट्ठा करना शुरू कर देता है, दूसरों का हक छीनकर अपनी तिजोरियां भरनी शुरू कर देता है, तब यह बुराई समाज के लिए अति घातक सिद्ध होती है। दुनिया

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

के अधिकांश लोग यदि भूखे-नंगे दुखी रहते हैं तो किसी एक या एक से अधिक के द्वारा इकट्ठी की गई दौलत का क्या लाभ ?

जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥
(पन्ना ८१)

पावन फरमान है कि पापों के बिना धन इकट्ठा नहीं किया जा सकता। सिक्ख धर्म ने नाम जपो, किरत करो, वंड छको का आध्यात्मिक, समाजवादी व क्रांतिकारी सिद्धांत विश्व को दिया है। किसी भी वस्तु को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। पदार्थों का सही ढंग से उपयोग करना चाहिए। भक्त शेख फ़रीद जी का फरमान है :

फरीदा जे जाणा तिल थोड़डे संमलि बुकु भरी ॥
(पन्ना १३७८)

सद्‌भावना और भाईचारे का संदेश देते हुए भक्त कबीर जी फरमान करते हैं :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
(पन्ना १३४९)

सभी को अपना समझना चाहिए। किसी को पराया नहीं समझना चाहिए। सभी इंसान एक ही परम पिता श्री अकाल पुरख की अखंड ज्योति से पैदा हुए हैं।

गुरबाणी में सच और सदाचार पर, उच्च आचरण पर बहुत ज़ोर दिया गया है। पराई स्त्री तथा पराये मर्द के साथ गमन करने का भी विरोध किया गया है। यह काम सामाजिक मर्यादा व नैतिकता के विरुद्ध है। यह शरीर और मन, दोनों को अपवित्र करने वाला काम है। भक्त नामदेव जी के कथनानुसार :

घर की नारि तिआगै अंधा ॥
पर नारी सिउ घालै धंधा। ॥ (पन्ना ११६४)

एक और बढ़िया एवं उत्तम सच को गुरबाणी उजागर करती है कि जैसा हम अन्न यानि अनाज खाते हैं, वैसा ही हमारा तन व मन बन जाता है। उस भोजन को खाने का कोई लाभ नहीं जिसे खाकर हमारा शरीर रोगग्रस्त हो जाए तथा हमारा मन अशांत व विकारग्रस्त हो जाए :

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
(पन्ना १६)

हमें अपनी उपजीविका अपने उचित साधनों व परिश्रम द्वारा जुटानी चाहिए। किसी अन्य पर निर्भर नहीं रहना चाहिए और निठल्ले नहीं बैठना चाहिए। अपनी उपजीविका अर्जित करने हेतु पाखंड तो हर्गिज़ नहीं करना चाहिए। गुरु साहिबान ने साधुओं, योगियों को जागृत किया जो धुनियां रमाकर, बदन पर भस्म लगाकर और घर-गृहस्थी त्यागकर भटकते फिरते हैं। यह मन को साधने का, साधना करने का उचित मार्ग नहीं है। निठल्ले बैठ दूसरों से मांगकर खाने की गुरु साहिब ने आलोचना की है :

मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ . . .
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (पन्ना १२४५)

किसी के घर-द्वार पर बैठकर सुख-सुविधाओं की इच्छा करना यह भी अच्छा नहीं है। यह एक तरह की परतंत्रता वाली अवस्था होती है। परतंत्रता मनुष्य को तन और मन, दोनों से असहाय बनाकर रख देती है। भक्त शेख फ़रीद जी फरमान करते हैं :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥ (पन्ना १३८०)

सदाचार का अपना ही महत्त्व होता है। परोपकार के काम करना और दूसरे लोगों के दुखों-कष्टों को दूर करना सर्वश्रेष्ठ कर्म होता है। इससे मन को, आत्मा को जो संतुष्टि एवं शांति मिलती है, वह अकथनीय, अवर्णनीय है। परोपकार के कार्य करने से हम भवसागर से पार हो सकते हैं। गुरबाणी का पवित्र फरमान है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में नैतिक पक्ष को विस्तृत रूप में पेश किया गया है।

गुरमति में हुक्म का संकल्प

*-डॉ. अमृत कौर**

"हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥" प्रभु के हुक्म के अनुसार जीवन व्यतीत करने से, उसका भाणा मानने से, उसकी रज़ा में राज़ी रहने से आत्मा को परमात्मा से अलग करने वाली हउमै की दीवार टूट जाती है-- *"नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥"* हउमै के कारण आत्मा परमात्मा से बिछुड़ती है। प्रभु-हुक्म मानने से निर्मल हुई आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है :

हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥
(पन्ना ७५३)

परमात्मा की रज़ा में राज़ी रहने में मानव का कल्याण छिपा है। उसकी रज़ा में राज़ी रहने से जीवन-यात्रा सहज हो जाती है। उसका हुक्म मानने से ही मनुष्य उसकी दरगाह में परवान होता है-- *"हुकमु मंने सो जनु परवाणु ॥"* परमात्मा का हुक्म मानना अपने आप को दैवी अनुशासन में ढालना है। उसकी आज्ञानुसार धर्म के मार्ग का अनुसरण करना है। दैवी कानून के साथ तालमेल स्थापित करना है, प्रभु के रहस्य को समझना है :

कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥ (पन्ना ८८५)

प्रभु के हुक्म का पालन करना उसको अपने जीवन का स्वामी बनाना है। हउमै से मुक्ति प्राप्त करना हुक्म को मानना है; प्रभु की बादशाहत को अपने अंदर स्थापित करना है; उसके शुभ गुणों को अपने अंदर विकसित और प्रफुल्लित करना है। संसार दैवी हुक्म का प्रसार है, प्रकाश है। दैवी हुक्म को जीवन में ढालना प्रभु-दरगाह में पहुंचने का प्रयास है।

सृष्टि के प्रारंभ में सर्वत्र शून्य का प्रसार था। परमात्मा शून्य अवस्था में था :

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ (पन्ना १०३५)

परमात्मा के हुक्म के अनुसार संसार का निर्माण हुआ। परमात्मा सृष्टि की रचना कर उसके कण-कण में समा गया। यह संसार परमात्मा के हुक्म का प्रसार है, विकास है, उपज है, कृति है, रूपमानता है :

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
(पन्ना १)

प्रभु के हुक्म की महिमा का वर्णन करना कठिन है। उसके हुक्म अनुसार ही जीवों का जन्म होता है-- *"हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥"* प्रभु के हुक्म अनुसार ही संसार आकार ग्रहण करता है और उसी में लीन हो जाता है-- *"हुकमि उपजै हुकमि समावै ॥"* प्रभु-हुक्म के अनुसार ही मनुष्य सुख-दुख और ऊंची-नीची पदवियां प्राप्त करता है-- *"हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥"* अपने हुक्म के अनुसार रचित सृष्टि को फलता-फूलता देखकर परमात्मा प्रसन्न हो रहा है :

हुकमी सहजे स्रिसटि उपाई ॥
करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ (पन्ना १०४३)

हुक्म का संकल्प गुरमति दर्शन का आधार है। हुक्म, रज़ा, अरबी भाषा के शब्द हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने हुक्म शब्द का प्रयोग विशाल अर्थों में किया है। हुक्म परमात्मा का कानून है, स्वभाव है, शब्द है, नाम है, धर्म और

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), फोन : ९८१५१-०९९५७*

कर्म है। हुक्म प्रभु की संकल्प-शक्ति, विचार, इच्छा व धर्म की शक्तियों का समूह है जो संपूर्ण संसार को जीवन प्रदान करता है। यह हुक्म अमूल्य है-- *"अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥"* इसका वर्णन करना कठिन है। परमात्मा का हुक्म प्रकृति का कानून है। दैवी हुक्म दैवी नाम के रूप में हमारी आत्मा में स्थित है, जो सतिगुरु की कृपा से पहचाना जाता है :

एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ *(पन्ना ७२)*

दैवी हुक्म से लाभ उठाने के लिए आवश्यक है कि दैवी हुक्म को जीवन में विकसित किया जाए। जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रभु-हुक्म पर चलना ज़रूरी है-- *"हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥"* नियमानुसार जीवन व्यतीत करने, सत्य और संयमित जीवन को अपनाने से जीवन में प्रसन्नता और खुशियों का संचार होता है :

हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥ *(पन्ना १०७७)*

हुक्म और रज़ा सच्चाई के दो पक्ष हैं। जहां दैवी हुक्म की रूपमानता होगी, वहां दैवी रज़ा मूर्तिमान होगी। जहां दैवी हुक्म की प्रफुल्लता जीवन-लाभ कहलाती है वहां रज़ा की प्रफुल्लता जीवन की अभिव्यक्ति कहलाती है। इन दोनों का पारस्परिक सम्बंध इस प्रकार है जैसे मिशरी और मिठास का, पुष्प और उसकी सुगंध का। जीवन वही सम्पूर्ण होता है जिसमें हुक्म और रज़ा पूर्ण रूप से विकसित होते हैं।

परमात्मा के हुक्म के अनुसार चलना शुभ गुणों को अपने जीवन में विकसित करना है। हुक्म अनेक शुभ गुणों का स्रोत है :

मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥
नानक दरगह पावै मानु ॥ *(पन्ना ९४४)*

प्रभु के हुक्म के अनुसार जीवन-यापन करने में मानव का कल्याण छिपा है। मनुष्य जीवन में आने वाले सुख-दुख को प्रभु की कृपा समझकर मानसिक संतुलन बनाए रखता है, चढ़दी कला में रहता है। हुक्म को अपने जीवन में ढालने से जीवन में ज्ञान, सिमरन, भक्ति, प्रेम, सत्य, सुंदरता, संयम, संतोष, पवित्रता आदि गुणों का विकास होता है। परमात्मा के हुक्म-पालन द्वारा अंतरात्मा में स्थित दैवी प्रकाश की अनुभूति होती है। मनुष्य दैवी अनुशासन (हुक्म) अनुसार चलता हुआ दैवी प्रेम, निष्काम सेवा, निरंतर सिमरन, भक्ति आदि का अभ्यास करता है। तब परमात्मा की नदर, बख़्शिश द्वारा आत्मा में प्रभु-नाम की ध्वनि गूंजने लगती है, जिसके जप, शब्द, नाम, नदर और कर्म पांच निशान हैं। परमात्मा का हुक्म मानना परमात्मा और आत्मा में तारतम्य स्थापित करने का प्रयास है। वह व्यक्ति, जो ऐसा करता है, जीवन में धन्य हो जाता है। प्रभु की उस पर अपार बख़्शिश होती है। संपूर्ण प्रकृति प्रभु के हुक्म अनुसार चल रही है, परमात्मा के अनुशासन में चल रही है। तभी वह अनुशासनबद्ध है :

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ . . .
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ . . .
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ *(पन्ना ४६४)*

यहां भय का अर्थ परमात्मा का हुक्म मानने से है, उसके अनुशासन अनुसार जीवन व्यतीत करने से है। जो मनुष्य परमात्मा के हुक्म अनुसार सिर झुका लेता है परमात्मा उसको दुख-सुख सम कर मानने की शक्ति प्रदान करते हैं-- *"हुकमे दुखु सुखु सम करि सहै ॥"* श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब, चार साहिबज़ादों तथा अन्य गुरसिक्ख शूरवीरों का असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहीद होना परमात्मा के हुक्म को प्रसन्नचित्त स्वीकार करना है, जो सिक्खों को शहीदों की कौम बनने की प्रेरणा देता रहा है और देता रहेगा।

जो प्रानी निसि दिनु भजै . .

-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ*

एक गुरसिक्ख परमात्मा का स्मरण करते हुए 'सतिनाम' शब्द का अपने जीवन में अनगिनत बार इस तरह प्रयोग करता है कि यह उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाता है। 'सतिनाम' उसे परमात्मा की ओर ले जाता है, परमात्मा की पहचान कराता है और परमात्मा में रम जाने में सहायक होता है। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार चिंतन और जप के समय केवल सत अर्थात् सत्य का अभ्यास किया जाता है जबकि 'नाम' उसके अस्तित्व का बोध कराता है। 'सतिनाम' वस्तुत: सत की प्रतीति को दृढ़ करने वाला है। बिना दृढ़ प्रतीति के सत का अभ्यास नहीं किया जा सकता, अपने विश्वास को सत पर टिकाया नहीं जा सकता। मोह-माया में फंसे जीव के लिए निरंकार की प्रतीति कठिन है। सिक्ख गुरु साहिबान ने इस मानवीय दुर्बलता को समझते हुए परमात्मा के प्रमुख गुण को ही उसके अस्तित्व का परिचायक बना दिया। इससे परमात्मा का निरंकार होना भी स्थापित रहा और संसार पर दृष्टि डाली तो विचित्र दृश्य देखा कि हर कोई परमात्मा का अपना-अपना स्वरूप गढ़े बैठा हुआ है और इस पर भारी विवाद भी है। उन्होंने इन विवादों एवं भ्रम का निवारण 'सतिनाम' से ही किया :

गड़ बगदादु निवाइ कै मका मदीना सभे निवाइआ।
सिध चउरासीह मंडली खटि दरसनि पाखंडि जिणाइआ।
पाताला आकास लख जीती धरती जगत सबाइआ।
जीते नव खंड मेदनी सति नामु दा चक्र फिराइआ।
देव दानो राकसि दैत सभ चिति गुपति सभि चरनी लाइआ।
इंद्रासणि अपछरा राग रागनी मंगलु गाइआ।
भइआ अनंद जगतु विचि कलि तारन गुरु नानकु आइआ।
हिंदू मुसलमाणि निवाइआ ॥

(भाई गुरदास जी, वार १:३७)

धर्म के विभिन्न क्षेत्रों में जहां-जहां भी गुरु नानक साहिब गए अथवा उनका संदेश पहुंचा, लोग पाखंड-कर्मों को छोड़कर परमात्मा के वास्तविक स्वरूप की ओर उन्मुख हुए जिससे आनंद का संचार हो गया और कल्याण, उद्धार की स्थितियां बनने लगीं। उन्होंने 'सतिनाम' के जरिए पाखंड और विवादों को पराजित किया। परमात्मा को सशरीर मानकर उसकी विभिन्न प्रकार से पूजा-अर्चना की जाती थी। कई विधि-विधान बना दिए गए थे और उस विधि-विधान को करने के लिए विशेषाधिकार प्राप्त एक वर्ग तैयार हो गया था। श्री गुरु नानक साहिब ने इनका निवारण करते हुए कहा कि परमात्मा को इस तरह प्रसन्न करके नहीं पाया जा सकता। उसकी वंदना तो सारी सृष्टि कर रही है :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ *(पन्ना ६६३)*

गुरु साहिब ने उपरोक्त वचन द्वारा जहां कर्मकांडों पर चोट की वहीं परमात्मा की

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३

महानता भी सामने रखी। एक थाली में कुछ सामग्री रखकर उसकी आरती नहीं की जा सकती। परमात्मा की आरती के लिए तो सारे आकाश जैसी विशाल थाली और सूर्य व चंद्रमा जैसे दीप चाहिए। विशाल मलय गिरि के चंदन वृक्षों की सुगंधि ही धूप बन सकती है। वायु स्वयं चंवर बन जाये और समस्त सृष्टि में खिल रहे सारे फूल उस पर अर्पित हो जायें। गुरु साहिब ने दिव्य दृष्टि से ऐसी आरती की कल्पना की। उन्होंने इस कल्पना से परमात्मा की व्यापकता को भी जोड़ा :

सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना ६६३)

गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा तो हज़ारों नेत्रों वाला है किंतु उसका कोई मूर्त रूप नेत्र नहीं। उसके हज़ारों स्वरूप हैं किंतु कोई शारीरिक स्वरूप नहीं है। हज़ारों पैर हैं परंतु मूर्त रूप पैर एक भी नहीं। हज़ारों नाक हैं किंतु सशरीर नहीं। वह सर्वत्र विद्यमान है और वही एक ज्योति है जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड को प्रकाशित कर रही है। गुरु साहिब ने इस तरह परमात्मा के निराकार स्वरूप को साकार रूप में व्यक्त करते हुए 'सति' का 'नाम' दिया।

यह एक महान धार्मिक-वैचारिक क्रांति की तरह ही था कि सदियों से प्रचलित कर्मकांडों, विधि-विधानों के सामने सरल-सुगम 'सतिनाम' की प्रतिष्ठा हो गयी और परमात्मा का सच संसार के सामने स्पष्ट हुआ। एक ऐसा सच जो घर-घर में व्याप्त था और जिसे पाने के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं थी। आवश्यकता थी तो उसे पहचान कर, उस पर अपने विश्वास को टिकाने की। 'नाम' ने सभी कर्मकांडों का स्थान ले लिया। जिसने सच जान लिया 'नाम' ही उसके लिए सर्वोपरि हो गया :

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥ *(पन्ना ६९४)*

उपरोक्त वचन भक्त रविदास जी के हैं जो पूजा की सारी प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री को परमात्मा के नाम से जोड़ देते हैं। उनके अनुसार परमात्मा के नाम का स्मरण ही सर्वश्रेष्ठ आरती है जो तन-मन को पवित्र कर देने वाला है। उसका नाम हो तो किसी आसन, केसर, चंदन, दीया-बाती, तेल, फूल-माला की आवश्यकता नहीं। परमात्मा का नाम ही केसर और चंदन है। स्वच्छ, सूचा कुछ भी नहीं है। अंत में भक्त रविदास जी निर्णय पर पहुंचते हैं कि सब कुछ परमात्मा का बनाया हुआ और परमात्मा का ही है तो उसे अर्पण करने को बचता ही क्या है। बस एक वही है और उसकी ही शोभा व्याप्त हो रही है। अंतिम पंक्ति को ध्यान से देखें तो बड़ा ही सारगर्भित निर्णय सामने आता है। 'नाम', बस, परमात्मा का ही है अर्थात् एक वही है जिसकी पहचान है क्योंकि वह अविनाशी है और सत्य है। शेष सभी नष्ट हो जाने वाले हैं और असत्य हैं इसलिए उनकी

कोई पहचान अथवा नाम नहीं है। जीव पता नहीं कब से योनियों में भटक रहा है और काल उसके सिर के ऊपर मंडरा रहा है। परमात्मा की महिमा परमात्मा ही जान सकता है, साधारण मनुष्य नहीं। परमात्मा स्वयं अपने से सुशोभित है।

श्री गुरु नानक साहिब ने जीव की अवस्था को समझते हुए ही 'सतिनाम' का चक्र चलाया और जीव के उद्धार का मार्ग प्रशस्त कर दिया। उन्होंने कहा कि नाम के बिना सब व्यर्थ है :

मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥
बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥
साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥
आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥
पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥
बिनु हरि नाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥
(पन्ना ५९)

जो लोग मोह-माया में उलझे रहे उनका जीवन व्यर्थ चला गया। शरीर, धन, संपदा, परिवार कुछ भी सहायक नहीं हुआ। 'नाम' के बिना संगी कोई नहीं होता। प्रारब्ध जो लिखा गया है उसे बदलना कठिन है। कुछ भी कर लें, कैसा भी कर लें, बस, परमात्मा का नाम ही ऐसा है जो परमात्मा की राह पर ले चलता है और परमात्मा से मिलन करा देता है सुख है तो परमात्मा के नाम में :

नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥
रसना राम नाम जसु कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥
नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥ (पन्ना २००)

परमात्मा के नाम के बिना सुख नहीं है। रसना पर सदा प्रभु-नाम का यशोगान होना चाहिए। वे प्रशंसायोग्य हैं जो परमात्मा का नाम जपते रहते हैं। उसके नाम के बिना कुछ भी स्थिर नहीं है :

जपि मन राम नामु पढु सारु ॥
राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥१॥ रहाउ ॥
किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥
जिसु बिखिआ कउ तुम्ह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥१॥
तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥
सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥२॥ (पन्ना १२००)

नाम के बिना और क्या है जिसे पाने या जिसके पीछे दौड़ने की कामना करें? जो दिख रहा है सब कुछ नष्ट हो जाने वाला है। जिसे पाने का यत्न करते रहते हैं वह (सांसारिक पदार्थ) अंततः पापों की गठरी बन जाता है। अज्ञानी लोग इस बात को समझ नहीं पाते और जीवन को व्यर्थ गंवा बैठते हैं :

राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥
नानक संत सदा थिरु निहलचलु जिन राम नामु आधारु ॥ (पन्ना १२००)

बड़े-बड़े लोग जिन्होंने लंबे-चौड़े साम्राज्य स्थापित किए वे भी चले गए और साम्राज्य यहीं धरे रह गये। मुक्त वही है इस संसार में जिसने प्रभु के नाम को अपने जीवन का आधार बना लिया है। चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए जब मनुष्य-देह प्राप्त होती है तो यह बड़े भाग्य की बात होती है। मनुष्य योनि में परमात्मा का नाम जपना जीते-जी मुक्त होना है :

दुलभ देह पाई वडभागी ॥
नामु न जपहि ते आतम घाती ॥१॥
मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥
नाम बिहून जीवन कउन काम ॥१॥ रहाउ ॥
खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥
कवन अरथ मिरतक सीगार ॥२॥

जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥
पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥३॥
कहु नानक गुरि मंत्र द्रिड़ाइआ ॥
केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥ (पन्ना १८८)

कितना भी हंसते-खेलते, खाते-पीते आनंद का भोग करें, यह सब व्यर्थ है मृत देह के श्रृंगार की तरह। परमात्मा से न जुड़ना पशु-पक्षी, कीड़े-मकौड़े के जीवन से भी निकृष्ट जीवन की तरह है। मन में दृढ़ता से 'नाम' को ही धारण करके जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

नाम जपना, नाम को हृदय में धारण करना, नाम को जीवन का आधार बना लेना तभी संभव है जब सत और असत, स्थिर और नाशवान का ज्ञान हो जाये, निरंकार के सर्वव्यापक स्वरूप की पहचान हो जाये और उसकी महिमा प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगे। तब बनती है आनंद की अवस्था और तब सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं :

सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥
नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ ॥५॥
जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥
अंदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥
एका टेक अगंम मनि तनि प्रभु धारई ॥
लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥
गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥
नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥
(पन्ना १४२५)

'नाम' ऐसा रस है जो कभी फीका नहीं पड़ता। इससे परमात्मा के दर पर श्रेष्ठ अवस्था बन जाती है। परमात्मा स्वयं सहायक होता है। उस एक का आधार लेने से, उसकी महिमा में रम जाने से सहज ही सुख प्राप्त हो जाते हैं :

नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥
नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥
(पन्ना १४२५)

'नाम' में रमे हुए मनुष्य अपने जीवन को तो सफल करते ही हैं उनकी विचार-चर्चा से समाज भी लाभान्वित होता है। 'सतिनाम' की महिमा कोई-कोई ही जान सकता है :

राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥
गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥
जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥
नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥ (पन्ना ६०२)

सतिगुरु की शरण में जाकर ही परमात्मा की राह का ज्ञान होता है और जिह्वा पर उसकी महिमा बस जाती है। 'नाम' का महत्त्व भी सतिगुरु की कृपा से ही स्पष्ट होता है। उसकी कृपा से प्रभु-नाम को मन में धारण करते हुए जप, तप और संयम मिलता है और उनकी लाज परमात्मा स्वयं सुरक्षित करता है।

मनुष्य के अपने वश में कुछ भी नहीं है। परमात्मा की कृपा से ही उसका नाम धारण किया जा सकता है :

हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥
सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥
गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥
अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥
आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥
हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥
(पन्ना ६९०)

श्री गुरु रामदास जी के उपरोक्त वचन उनके लिए एक बड़ी सीख की तरह हैं जो 'नाम' जपना चाहते हैं। 'नाम' जपने के लिए

(शेष पृष्ठ ४० पर)

भाई गुरदास जी

*-डॉ निर्मल कौशिक**

भाई गुरदास जी सिक्ख धर्म के सुप्रसिद्ध प्रचारक, विद्वान, कवि, व्याख्याता एवं महान लेखक माने जाते हैं। गुरु-घर की जितनी सेवा भाई गुरदास जी ने की है उसके समान कोई दूसरा उदाहरण बहुत कम मिलता है। भाई गुरदास जी ने जब से सिक्खी धारण की, तब से ही सिक्खी का प्रचार करते रहे। तीसरे सतिगुरु से लेकर छठे सतिगुरु तक गुरसिक्खी का प्रचार बड़े अच्छे ढंग से किया। आपकी विद्वता, बुद्धिमता किसी से भी छिपी नहीं है। इसी के फलस्वरूप आपको गुरु-घर के महान कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। आपने सिक्ख धर्म एवं गुरमति के गहन तत्त्वों को अपनी रचनाओं के माध्यम से सार रूप में प्रकट किया, जिसका आधार सिक्ख धर्म और गुरमति दर्शन है। आपके महान कृत्यों, रचनाओं तथा व्यक्तित्व के आधार पर आपको सिक्ख धर्म में विशेष दर्जा हासिल है।

भाई गुरदास जी अभी तीन वर्ष के ही थे कि आपके पिता जी अकाल चलाना कर गए। आप रिश्ते में श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे थे। श्री गुरु अमरदास जी का आप से अपार स्नेह था। आपके माता-पिता भी गुरु-घर के अनन्य सेवक थे। आप बचपन से ही योग्य, प्रतिभाशाली व श्रेष्ठ कवि थे। बचपन में ही आपने अपनी माता जी के साथ कई तीर्थ-स्थलों की यात्रा कर ली थी। आप में दैवी प्रतिभा थी। भाई गुरदास जी अपनी प्रतिभा का प्रमाण बचपन में ही देने लगे थे। आपको छोटी अवस्था में ही गुरु-घर के कई कार्य सौंपे गए, जिनका निर्वाह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जब श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञा से श्री गोइंदवाल साहिब नगर की स्थापना की तो सारा गुरु-परिवार श्री गोइंदवाल साहिब में आकर रहने लगा। भाई गुरदास जी के बचपन के दिन श्री गोइंदवाल साहिब में ही बीते। वहां के सम्पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण का प्रभाव भाई गुरदास जी पर पड़ना स्वाभाविक था। आप जी ने गुरमुखी, हिंदी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। आप गुरु-घर के वातावरण में पूरी तरह से रंग गए। आप हरमन प्यारे हो गए। आपकी विद्वता की महिमा चारों ओर फैल गई।

आपका व्यक्तित्व महान था और विचार उच्च थे। गुरु जी के बताए मार्ग पर दृढ़ भाव से चलना आपका स्वभाव बन चुका था। आप में अच्छे सेवक, आदर्श भक्त और आज्ञाकारी शिष्य के सभी गुण मौजूद थे। आप विद्यार्थी काल में भी प्रत्येक बात को गहराई से सोचते थे और उसकी अच्छे ढंग से व्याख्या करते थे। आप संस्कृत का गहन अध्ययन करने हेतु काशी भी गए। तीव्र बुद्धि के कारण आप शीघ्र ही प्रकांड विद्वान बन गए। आपने आध्यात्मिक विषयों को लेकर अनेक पंडितों से तर्क-वितर्क भी किए। गुरु जी की आप पर अपार कृपा थी। आप सतिगुरु जी के निर्वाचित और निकटवर्ती सिक्खों में से एक थे। आप गुरु जी की हजूरी में रहते थे। बादशाह अकबर की श्री गुरु अमरदास जी के प्रति असीम श्रद्धा थी। गुरु जी के निकट होने के कारण उसे आपसे भी प्रेम हो गया। कई-कई दिन वह गुरु जी से आज्ञा लेकर भाई साहिब को आगरा या दिल्ली बुला लिया करता था। अकबर

**१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट-१५१२०३; फोन : ०१६३९-२६३०१७*

विद्वानों को उचित सम्मान देता था। वह भाई गुरदास जी से गुरबाणी सुनकर आनंदमग्न होता था और भाई जी इस तरह से गुरबाणी का प्रचार करने में गौरव का अनुभव करते थे। जब श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समाए, तब आप आगरा में थे। श्री गुरु रामदास जी गुरुआई पर सुशोभित हुए।

भाई गुरदास जी ने सिक्खी प्रचार के कर्त्तव्य को और अधिक विकसित किया। श्री गुरु रामदास जी के आदेश पर आपने सिक्ख धर्म के प्रचार के साथ-साथ गुरबाणी को एकत्र करना भी आरंभ किया। आप लोगों की संशय-निवृत्ति भी करते और गुरबाणी-कथा द्वारा उन्हें मुग्ध भी। आप गुरु-घर के प्रत्येक कार्य में तन्मयता से भाग लेते थे। भाई साहिब ने आगरा जैसे नगरों को केंद्र बनाकर गुरमति का प्रचार ज़ोर-शोर से किया। संगत और धर्मशालाओं की स्थापना की। सिक्ख धर्म सम्बंधी भवनों का निर्माण-कार्य भी आपकी देख-रेख में ही होता था। गुरु साहिबान द्वारा अनेक गांव और नगर बसाए जाने में भी आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है। आपने निर्माण-कार्य की देख-रेख ही नहीं की अपितु बनाने में हाथ भी बंटाया। आपको भवन निर्माण-कला का पूर्ण ज्ञान था। श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण हेतु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जिन महान गुरसिक्खों की सेवा प्राप्त की थी वे थे भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी। भाई गुरदास जी की योग्यता और प्रतिभा के बल पर ही उन्हें गुरु-घर के प्रत्येक कार्य के लिए नियुक्त कर दिया जाता था। भाई साहिब सौंपे गए किसी भी कार्य को पूर्णतया जिम्मेदारी, लगन, परिश्रम और योग्यता से निभाते। श्री गुरु अरजन देव जी के समय श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण-कार्य एवं सरोवर को पक्का करने में भी आप मुख्य सेवदारों में रहे।

श्री गुरु अरजन देव जी का बड़ा भाई प्रिथी चंद गुरु जी से ईर्ष्या करता था। वह गुरुआई न मिलने के कारण गुरु-घर के विरुद्ध दुष्प्रचार करता था। उसने श्री गुरु अरजन देव जी के विरुद्ध अनेक मुस्लिम शासकों के कान भरे, संगत को भी गुमराह किया। उसने खुद को गुरु-घर का असल दावेदार बताकर लोगों से धन बटोरना आरंभ कर दिया। प्रिथी चंद के चेले भोले-भाले सिक्खों को घेर कर प्रेरणा देकर प्रिथी चंद के सामने उपस्थित कर देते थे। भाई गुरदास जी से यह सब सहन नहीं हुआ। गुरु-घर को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बनाने और सिक्ख धर्म का प्रचार करने हेतु भाई गुरदास जी ने दसवंध व अनाज आदि श्री गुरु अरजन देव जी के यहां भेंट करने के लिए संगत को समझाया। संगत के सहयोग से गुरु-घर का आर्थिक ढांचा सुदृढ़ हो गया और प्रचार तेज़ी से बढ़ने लगा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन कर भाई गुरदास जी से लिखारी की सेवा ली। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया। आपके श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ निकट सम्बंध थे। आपने आजीवन गुरु-घर की सेवा करके सिक्ख धर्म का सही अर्थ में प्रचार किया और गुरबाणी का संदेश देकर लोगों का मार्गदर्शन किया। आपके लिए गुरु और गुरमति से बढ़कर कुछ नहीं था। आपने तन, मन से गुरु-घर की सेवा करके जीवन सफल किया।

वृद्धावस्था में भी आप गुरु-घर की सेवा करते थकते न थे। अपने अंतिम समय में आपने श्री गोइंदवाल साहिब के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सब कुछ जान चुके थे। दीवान सजाया गया, कीर्तन हुआ। भाई गुरदास जी परम ज्योति में विलीन हो गए।

गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा

*-डॉ. जगजीत कौर**

सिक्ख धर्म का इतिहास संघर्ष का इतिहास है। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रस्थापित और अन्य गुरुदेव साहिबान द्वारा सत्य, प्रेम, भ्रातृ-भाव, सद्भावना एवं पवित्र प्रेम पर आधारित महत् जीवन-मूल्यों को निरंतर आगे बढ़ाते हुए जिन सिद्धांतों की प्रस्थापना की गई उन्हें सुरक्षित रखने एवं समग्र मानवता को उसी महत् पथ पर अग्रसर करते रहने के लिए गुरु के सिक्खों को निरंतर संघर्ष करना पड़ा। उन्हें अनेक शहादतें देनी पड़ीं, कुर्बानियां करनी पड़ीं और निरंतर असहय कष्ट सहने पड़े। यह हमारी विडंबना रही कि सिक्ख धर्म का अभ्युदय काल मुगल सत्ता की स्थापना के साथ ही रहा। प्रथम मुगल बादशाह बाबर था। श्री गुरु नानक देव जी इस जाबिर बादशाह को सही रास्ते पर लाने में संघर्षरत रहे। तत्पश्चात् निरंतर मुगल सत्ता और गुरु साहिबान गुरु के प्यारे सिक्खों का विरोध चलता रहा। एक समय ऐसा भी आया कि सिक्खों की धड़पकड़ होती रही, उनके सिरों के मोल-तोल होते रहे, सिक्ख शहर, नगर, घरों को छोड़ जंगलों में मारे-मारे फिरते रहे। ऐसी स्थिति में पावन गुरुधामों के रख-रखाव का प्रबंध महंत, मसंद, उदासी साधू, निरमले संत आदि करते रहे। प्रारंभ में तो गुरुधामों की व्यवस्था गुरु-मर्यादा, गुरु-उपदेशानुसार होती रही किंतु धीरे-धीरे ये महंत आदि गुरमति से दूर हो मनमानी करने लगे और गुरुधामों की मर्यादा भंग होने लगी।

महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरुधामों के नाम ज़मीन आदि लगवाकर उनकी आय के साधनों में बढ़ोत्तरी की तथा गुरुधामों की इमारतों के निर्माण के साथ-साथ उनकी बाहरी बनावट-सजावट आदि की भरपूर सेवा की। इससे गुरुधामों की जागीर, आय आदि बढ़ जाने से इन पर काबिज पुजारी और अधिक ऐश-प्रस्ती से रहने लगे। गुरुधाम मनमानी, ऐयाशी के अड्डे बना दिए।

महाराजा रणजीत सिंघ के बाद पंजाब पर अंग्रेज काबिज हो गए। उन्होंने पुजारियों-महंतों को और शह दी। उन्होंने देख लिया था कि सिक्ख शक्तिशाली कौम है और इनकी शक्ति का मुख्य स्रोत गुरुधाम हैं। अपने गुरु पर इन्हें अटूट विश्वास और श्रद्धा है। मर्यादा और श्रद्धा भंग होती ये सहन नहीं कर सकते। 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति के तहत अंग्रेजों ने गुरुद्वारों को अपनी राजनीति का केंद्र बना लिया। महंतों-पुजारियों को शह देकर गुरुद्वारों के अंदर ब्राह्मणी-पुरोहितवादी रीति-रिवाज़, भेदभाव, वर्ण-भेद, जाति-भेद आदि का प्रचलन करवा दिया। महंत-पुजारी गुरुद्वारों के अंदर अंग्रेज सरकार के गुण गायन करने लगे। उनकी राज्य सफलता के लिए अरदासें होने लगी। इससे अंग्रेजों की यह नीति रही कि गुरुद्वारों पर कब्ज़ा करके अपनी राज्य-शक्ति को मज़बूत और सिक्ख शक्ति को कमज़ोर कर दिया जाये। कुछ सूझवान सिक्खों में जागृति आई। उन्होंने जगह-जगह जाकर सिक्खों को प्रेरित किया। कुछ स्थानीय अकाली जत्थे कायम किए गए।

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

इन स्थानीय अकाली जत्थों ने कुछ गुरुद्वारों के प्रबंध अपने हाथ में ले लिए, किंतु कानूनी सहायता न मिलने पर संगठित रूप में कार्य नहीं हो सका। अंततः गुरुद्वारों के प्रबंध सुचारू ढंग से चलाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर का गठन किया गया। ३० अप्रैल, १९२१ ई को इसका रजिस्ट्रेशन करवाया गया। नियम निर्धारित कर जुलाई, १९२१ ई में चुनाव किया गया और २७ अगस्त, १९२१ ई को इसकी प्रथम मीटिंग हुई। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार कमेटी ने अत्यंत उत्साह और समर्पित सेवा-भाव से गुरुद्वारों के प्रबंध सुधार का कार्य आरंभ किया। इस प्रबंध सुधार लहर के कार्य में अनेक अड़चने भी आईं और गुरु के प्रेमियों को अनेकों कुर्बानियां भी देनी पड़ीं। सिंघों ने शहीदियां प्राप्त कर, मोर्चे बांधकर गुरुधामों को भ्रष्ट महंतों के कब्ज़े से छुड़वाया। अंग्रेज सरकार को मुंह की खानी पड़ी। गुरु-प्रेमियों ने अपनी त्याग-भावना से गुरु-चरणों के प्रेमी-भंवरे बन उसे अच्छा सबक सिखाया। सिक्खों ने शांतमयी आंदोलन के तहत अनेक मोर्चे लगाए जिसमें गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा विशेष महत्त्व रखता है।

श्री अमृतसर साहिब से जो सड़क अजनाला तहसील को जाती है उस मुख्य सड़क कसबा कुक्कड़ांवाला स्थित है। यहां से एक सड़क फ़तहिगढ़ चूड़ियां शहर को जाती है। इसी सड़क पर स्थित गांव घुक्केवाली में श्री अमृतसर से २० किलोमीटर की दूरी पर गुरुद्वारा गुरु का बाग है। इस पावन स्थान पर पहले पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का आगमन हुआ था और फिर नवम् गुरुदेव श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पावन चरणों का स्पर्श हुआ। गुरुद्वारा साहिब के साथ लगती काफी ज़मीन है जिसमें बाग था और उसे गुरु का बाग कहा जाता था। यहीं से श्री अमृतसर के गुरुद्वारा साहिबान और आस-पास के अन्य गुरुधामों में लंगर के लिए ईंधन हेतु लकड़ियां काटकर भेजी जाती थीं।

जब गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चल रही थी उस समय गुरुद्वारा गुरु का बाग महंत सुंदर दास के प्रबंध अधीन था। गांव घुक्केवाली की संगत का कहना था कि महंत सुंदर दास अत्यंत भ्रष्ट आचरण वाला व्यक्ति है। शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन करता है। इसने एक आचरणहीन स्त्री, जो स्वयं भी शराब का सेवन करती है तथा विधवा है, के साथ बिना विवाह किए उसे अपने घर पर रखा हुआ है। इन दोनों की शर्मनाक हरकतों से आम संगत परेशान रहती थी। अपनी इन घटिया हरकतों के कारण महंत पूरे इलाके में बदनाम हो चुका था। गांव घुक्केवाली की संगत की विनती पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कार्यकारिणी कमेटी सदस्य सरदार दान सिंघ को नियुक्त किया कि वे महंत के साथ बातचीत करें। संगत की मांग पर, जिन्हें मोर्चों के पितामय कहा जाता है, जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर की अगुआई में ५० सिंघों का एक जत्था श्री अमृतसर से तांगों पर सवार हो राजासांसी पहुंचा। वहां से पैदल घुक्केवाली गांव पहुंचा। स्थानीय सिंघों को ख़बर मिली तो वे एक दिन पहले ही गांव घुक्केवाली पहुंच गए। रास्ते में आस-पास के सिंघ भी मिलते गए। चार-पांच सौ के करीब संगत गुरुद्वारा साहिब में एकत्रित हुई। महंत ने भी भाग-दौड़ शुरू की और अपने हिमायती स. अमर सिंघ झबाल को बुलवा लिया, जिसने समझौता करवा महंत से लिखित माफी मंगवाई और लिखा कि भविष्य में वह मर्यादा में रहकर कार्य करेगा। गुरुद्वारा गुरु का बाग गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को दिया जायेगा। वह कमेटी के आदेश का पालन करेगा। कमेटी की नामजद सब-कमेटी के अधीन कार्य करेगा।

अमृतधारी सिंघ सजेगा। किसी एक स्त्री के साथ अनंद कारज करेगा।

इसी अनुसार महंत श्री दरबार साहिब आया। खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त की। उसका नाम जोगिंदर सिंघ रखा गया। रक्खे गांव की ईशरी नामक स्त्री के साथ अनंद कारज करवाया। उसने भी पाहुल-पान की और उसका नाम गिआन कौर रखा गया। फरवरी, १९२२ ई में महंत ने पुन: शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से समझौता किया और स्वयं के लिए १२० रुपए मासिक पेंशन पा लेने, श्री अमृतसर में मकान स्वीकार करते हुए गुरुद्वारा गुरु का बाग का पूरा प्रबंध कमेटी को सौंप देना मान लिया। इसी बीच फिर उसने चालाकी की। गुरुद्वारे की सेवा करते सेवादारों के साथ दुर्व्यवहार करने लगा।

८-९ अगस्त, १९२२ ई को जब सिंघ गुरुद्वारा गुरु का बाग से लकड़ी लेने गए तो वो झगड़ने लगा। महंत ने पुलिस बुला ली जिसने पांच सिंघों का चलान कर दिया। इन्हें गिरफ्तार कर मिस्टर जैनकिन की अदालत में पेश किया गया, जहां लकड़ी चोरी करने के जुर्म में इन पर पचास-पचास रुपए का जुर्माना लगाकर इन्हें छ: महीने की सख़्त कैद की सजा सुनाई गई। इससे सिंघ भड़क उठे और मोर्चा आरंभ हो गया। मोर्चे का आह्वान किया गया और मोर्चे के लिए सिंघों की भर्ती आरंभ हो गई। जल्दी ही १०० सिंघों का जत्था तैयार हो गया और श्री अकाल तख़्त साहिब पर अरदासा सोध गुरुद्वारा गुरु का बाग की ओर रवाना हो गया। भाई मान सिंघ हंभे वाले की जत्थेदारी में गुरुद्वारा गुरु का बाग की ओर जाते इस जत्थे को रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया गया। २२ अगस्त से रोज़ाना १०० सिंघों का जत्था गुरुद्वारा गुरु का बाग की ओर रवाना होता। उस समय श्री अमृतसर पुलिस का डिप्टी सुप्रिंटेंडेंट मिस्टर बी. टी. था। उसने अपने साथ कुछ और पुलिस अफसर तैनात कर लिए। इन सभी ने गुरुद्वारा गुरु का बाग को घेर लिया। भादों की अमावस का दिन होने के कारण संगत गुरुद्वारा साहिब में नत्मस्तक होने जा रही थी। इन्हें रास्ते में ही रोक कर, इन पर बुरी तरह से डंडे बरसा कर, इन्हें मार-मार कर जख़्मी कर दिया गया। कुछ संगत बेहोश हो गई, जिन्हें केशों से पकड़, घसीटकर साथ लगते गंदे पानी के तालाब में फेंक दिया गया। जो सिंघ गिरफ्तार हुए उन पर महंत की शह पर सरकार ने लकड़ी चोरी का केस बना कर उन्हें कैद कर लिया। ऐसे में सिंघों में और क्रोध व जोश भर गया। वे प्रतिदिन लंगर के लिए लकड़ी लेने जाते और पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए जाते। २५ अगस्त, १९२२ ई तक इन सिंघों की गिनती २१० हो गई। दिन-प्रतिदिन सिंघों की गिनती बढ़ती ही जाती थी और पुलिस के अत्याचार भी बढ़ते ही जा रहे थे। पुलिस भड़क उठी थी। बी. टी. ने अजनाला के तहसीलदार जहूर-उद-दीन और डिप्टी सुप्रिंटेंडेंट शाम सिंघ को भी साथ ले लिया। शांतमयी प्रदर्शन करती संगत को बुरी तरह से मार-पीट कर जख़्मी कर दिया जाता। २६ अगस्त को पट्टी वाले बाबा केहर सिंघ के साथ ३६ सिंघों का जत्था लकड़ी काटने गया। उन सभी ३६ सिंघों को पुलिस ने मार-मार कर जख़्मी एवं बेहोश कर दिया।

अंग्रेज सरकार के जुल्म इस कद्र बढ़ गए थे कि गुरुद्वारा साहिब के लंगर के लिए ले जायी जाने वाली रसद पर भी रोक लगा दी गई। आस-पास के गांवों से जो लोग लंगर के लिए रसद लेकर आते, पुलिस उस रसद को छीन अपने कब्ज़े में कर लेती और लाने वालों को मार-पीटकर जख़्मी कर देती। मोर्चे में भाग लेने के लिए लायलपुर से एक जत्था आया। इनके लंगर का प्रबंध पास के गांव वालों ने

किया। गुरुद्वारा साहिब के बराबर वाले कुएं पर लंगर पहुंचा दिया गया, जहां से उठवा कर सिंघों तक पहुंचाना था। इसका दायित्व जत्थेदार शरम सिंघ ने लिया। पच्चीस सिंघों को साथ ले वे बड़ी दिलेरी से बी. टी. का सामना करते हुए, उसके साथ जूझते हुए लंगर उठाकर ले आने में सफल हो गए। बी. टी. बहुत क्रोधित हुआ। उसने इन पर गोली चलाने की आज्ञा मांगी, परंतु सरकार ने आज्ञा नहीं दी।

इसी क्रम से १७ नवंबर तक सिंघों के जत्थे गुरुद्वारा गुरु का बाग जाते रहे। इन जत्थों को गुरुद्वारा साहिब पहुंचने से पहले ही पुलिस रोक लेती। 'सतिनाम-वाहिगुरु' नाम-सिमरन करते शांतमयी जत्थों पर पुलिस डंडे बरसाने लगती। डंडों की मार से बेहोश हो गिर पड़े सिंघों पर पुलिस अपने घुड़सवार सिपाहियों को छोड़ देती। इनके पास पालतू भयानक कुत्ते भी होते। घोड़े सिंघों को कुचलते, मसलते रहते। कुत्ते मांस नोच-नोच कर खाते। जुल्म और अत्याचार का इतना भयावह दृश्य होता कि देखने वालों के कलेजे फूट जाते। इसी दौरान एक ईसाई पादरी सी. एफ. एंड्रीऊज स्वयं गुरुद्वारा गुरु का बाग पहुंचा और उसने अपनी आंखों से जुल्म और तशद्दुद का दृश्य देखा। उसका हृदय करुणा से भर उठा। उसने स्वयं लिखा कि "मैंने देखा कि प्रभु-प्रार्थना में जुड़े एवं मुख से 'सतिनाम-वाहिगुरु' उच्चारण करते सिंघों की छातियों पर जूतों समेत पुलिस वाले खड़े रहते। शांतमयी सिंघों पर भयानक डंडों की बरसात होती देख मुझे अपने पर नियंत्रण रखना कठिन हो रहा था। और भी दर्दनाक तथा शर्मनाक दृश्य यह था कि इन जख़्मी सिंघों के बचाव में जो आते, बेहोश सिंघों को जो गाड़ियों आदि में रखते, उन पर भी बेरहमी से डंडे बरसाए जाते।"

बी. टी. ने गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे में इतना भयानक तशद्दुद किया कि उसने खुद अपने हाथों से अपने पागल कुत्तों को सिंघों पर छोड़ा, जिसकी रिपोर्टें दुनिया भर के अख़बारों में तस्वीरों सहित छपी थीं। अमेरिकी पत्रकार कैप्टन वरगीज ने गुरुद्वारा गुरु का बाग के आंदोलनकारियों पर होने वाले जुल्मों की डाक्यूमेंटरी फिल्म तैयार की, जिसमें शांतमयी सिंघों पर पुलिस द्वारा डंडों का प्रहार करते और पुलिस के पालतू पागल कुत्तों द्वारा सिंघों को नोचते, घायल करते, काटते दिखाया गया। यह फिल्म अमेरिका में दिखाई गई। अमेरिका में दर्शकों के हृदयों में सिंघों के प्रति संवेदना जागृत हुई। इस पर यह फिल्म न दिखाए जाने के सम्बंध में ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने अमेरीकन राष्ट्रपति को पत्र लिखकर अनुरोध किया, क्योंकि इससे अंग्रेज सरकार की बदनामी हो रही थी। जब विश्व भर की अख़बारों में अंग्रेजी जुल्म की दासतान सुर्खियों में आने लगी तो अंग्रेज सरकार घबरा गई। इधर जत्थों का यह हाल था कि पांच हज़ार से ऊपर सिंघ गिरफ्तार हो चुके थे, फिर भी प्रतिदिन पूरे उत्साह से भारी जत्थे सिर पर कफन बांधे, उफनते चले आ रहे थे। गुरु के नाम पर सिंघ बेधड़क थे।

अंत में अंग्रेज सरकार ने समझौते का रास्ता निकाला। रिटायर्ड इंजीनियर राय बहादुर सर गंगा राम ने एक साल के लिए ज़मीन का पट्टा लिखवा लिया। २००० रुपए सालाना ठेका तय हुआ। सर गंगा राम ने लंगर के लिए लकड़ियां देना मान लिया। पुलिस हटा दी गई। १८ नवंबर को सिंघों ने धैर्य, शक्ति, दृढ़ता, निडरता और बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए फ़तहि हासिल की। याद रहे कि गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे की सफलता ने भारत की आज़ादी की नींव रखी थी।

सिक्ख धर्म में आज़ादी का संकल्प

*-प्रिं. सवरनजीत सिंघ**

सिक्ख धर्म में आज़ादी के संकल्प का मूल स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी है। गुरबाणी में आए गुरु-उपदेश या गुरु-फरमानों के आधार पर इस विचार को बयान किया जा सकता है। गुरबाणी में आया मुक्ति का संकल्प सिर्फ आत्मिक आज़ादी तक ही सीमित नहीं है, इस विचार ने सिक्खों में सामाजिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति की भावना को भी जन्म दिया। हम इस विचार का इतिहासीकरण देखते हैं। चाहे यह ठीक है कि मुक्ति के संकल्प का प्रथम पक्ष आत्मिक है किंतु इस विचार ने सिक्खों में हर प्रकार की गुलामी का फंदा उतार फेंकने की भावना पैदा की। श्री गुरु नानक देव जी ने भारतीय लोगों में आ चुकी सभ्याचारक गुलामी का उल्लेख कर इससे आज़ाद होने की प्रेरणा दी। गुरु-वाक्य है :

घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ (पन्ना ११९१)

वास्तव में आज़ादी आत्मा या मन की है। अगर मनुष्य आत्मिक रूप से गुलाम है तो राजनीतिक रूप से आज़ाद होता हुआ भी वह गुलाम रहता है। आत्मिक आज़ादी ही सामाजिक तथा राजनीतिक आज़ादी के रूप में प्रकट होती है। जो मनुष्य हर पक्ष से आज़ाद है उसको गुरबाणी में भक्त, संत या ब्रह्मज्ञानी कहा गया है। ऐसा मनुष्य *"मनि जीतै जगु जीतु"* वाला होता है। इसके विपरीत एक बादशाह भी गुलाम हो सकता है जैसे कि सिकंदर बादशाह था। उसको उसके उस्ताद अरस्तु ने कहा था कि "सिकंदर! तू बादशाह होते हुए भी अपने मन का गुलाम है।" आध्यात्मिक व्यक्ति पांचों विषय-विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से स्वतंत्र होता है। वह *"आतम जिणै सगल वसि ता कै"* वाले लक्षण वाला होता है।

गुरबाणी के आत्मिक आज़ादी के संकल्प का आधार पराभौतिक व दार्शनिक है। यह विचार परमात्मा के पूर्ण रूप से स्वतंत्र होने पर आधारित है। गुरबाणी के अनुसार परमात्मा निर्भय एवं निरवैर है। निर्भय परमात्मा का सिमरन करने वाला मानव भी पूर्ण रूप से निर्भय तथा आज़ाद हो जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी का पावन कथन है :

निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ (पन्ना २९३)

इस प्रकार के संकल्प ने सिक्खों में आज़ाद किस्म की तबीयत या स्वभाव को पैदा किया। सिक्ख मुख्य रूप से आज़ादी पसंद स्वभाव वाला मनुष्य है और आज़ादी उसका प्रारंभिक अधिकार है। मनुष्य की आज़ादी के अधिकार को पश्चिम का महान फिलासफर रूसो भी मानता है। वह मनुष्य को जन्म से ही स्वतंत्र मानता है। मनुष्य को समाज ने गुलाम बनाया है। उसका कथन है :- "Man is born free, but is found everywhere in chains."

अर्थात् मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र है, किंतु उसको हर जगह 'जंज़ीरों' में देखा जाता है।

सिक्ख इतिहासकारों में प्रसिद्ध इतिहासकार

**७६, प्रकाश हाऊस, गुरु तेग बहादर कालोनी, पटियाला-१४७००१*

'प्राचीन पंथ प्रकाश' के कर्त्ता भाई रतन सिंह (भंगू) ने सिक्खों के आज़ाद स्वभाव के बारे में इस प्रकार लिखा है-- "सिक्ख या तो पूर्ण स्वतंत्र है या बागी।" वास्तव में धर्म चेतना ही मानव को पूर्ण रूप से आज़ाद करती है। गुरबाणी ने सिक्खों में आज़ादी की भावना को जन्म दिया। सिक्ख केवल खुद ही आज़ाद होना नहीं चाहता बल्कि दूसरों को भी आज़ाद देखना चाहता है। गुरबाणी की इस भावना (जो इन महान पावन कथनों में मौजूद है) ने सिक्खों को राजनीतिक आज़ादी की प्राप्ति के लिए तैयार किया। भक्त शेख़ फरीद जी का पावन फरमान है :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का पावन फरमान है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईनस्टाईन का कहना भी सिक्ख के आज़ाद स्वभाव के साथ काफी मेल खाता है। उसका विचार है-- "आज़ादी तथा विवेक वाला मनुष्य तबाह तो हो सकता है परंतु वो किसी का गुलाम नहीं हो सकता।" ऐसे स्वभाव वाले मनुष्य को सिक्ख धर्म ने जन्म दिया जिसको खालसा या सिंघ कहा जाता है तथा जिसको श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सच्ची पातशाही के साथ निवाजित किया :

इन ग्रीब सिंघन को दयै पातिशाही।
ये याद रखैं हमरी गुरिआई।

मुक्ति के संकल्प का इतिहासीकरण श्री गुरु नानक देव जी ने आरंभ किया तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसको पूरा किया। उसके बाद सिक्खों की आज़ादी का पूरा संघर्ष बाबा बंदा सिंघ बहादुर की अगुआई में जारी रहा। उन्होंने सिक्ख राज्य कायम किया तथा गुरु साहिबान के नाम पर सिक्का चलाया। इसी की बदौलत आगे चलकर स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने सिक्ख राज्य का सुख जनता को प्रदान किया तथा उन्हें लोगों ने सुलतान-उल-कौम के नाम से जाना। महाराजा रणजीत सिंघ ने एक अधिक स्थिर सिक्ख राज्य की स्थापना की, जिसको उस समय का नमूने का राज्य भी कहा जा सकता है। १८४९ ई. में सिक्ख राज्य का अंत होने के कारण सिक्ख भी अंग्रेजों के गुलाम हो गए। सिक्ख यह गुलामी कब तक सहन कर सकते थे? उन्होंने भाई महिराज सिंघ की अगुआई में स्वतंत्रता का संग्राम आरंभ किया। भाई महिराज सिंघ के बारे में लार्ड डलहौज़ी ने लिखा था कि भाई महिराज सिंघ माझा क्षेत्र में बगावत करने वाला है तथा सिक्ख भी इकट्ठे कर सकता है। आज़ादी की प्राप्ति हेतु सबसे पहले व्यक्तिगत प्रयत्न करने वाले भाई महिराज सिंघ थे, जिनको अंग्रेजों द्वारा बगावत करने के दोष में १८४९ ई में फांसी दे दी गयी। इसके बाद सिक्खों द्वारा राजसी स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु जत्थेबंदक प्रयत्न नामधारी लहर, गदर लहर, बब्बर लहर तथा अकाली लहर के रूप में किया गया। इन जत्थेबंदक प्रयत्नों के दौरान सिक्खों ने नामधारी लहर के तहत अंग्रेज राज्य के विरुद्ध असहयोग लहर चला कर महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन का मार्गदर्शन किया। अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध चलाई गई नामधारी लहर राजनीतिक आज़ादी

की प्राप्ति हेतु पहला सफल प्रयत्न था। इसके पश्चात अकाली लहर तथा गदर लहर ने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव हिलाकर रख दी तथा भारत की आज़ादी का रास्ता खोल दिया। अकाली लहर चाहे प्रारंभिक रूप में गुरुद्वारा साहिबान की आज़ादी की लहर थी किंतु इसने भारत की राजनीतिक आज़ादी के प्रयत्न को और प्रचंड कर दिया। अकालियों की दृढ़ता तथा कुर्बानियों को देखकर भारत के कांग्रेसी अगुआ यह कहने तथा महसूस करने लग गए कि भारत को अकाली ही आज़ाद करवा सकते हैं।

पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा-- "(गुरुद्वारा) गुरु का बाग (के मोर्चे) में से ही देश की स्वतंत्रता की लहर उठी है और अब इसी ने ही देश को स्वतंत्र करवाना है।"

पंडित मोती लाल नेहरू ने कहा-- "मैं प्रणाम करता हूं अकालियों को, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए संघर्ष आरंभ किया है तथा आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं।"

दादा भाई नारो ने तो यहां तक कहा कि "सिक्ख कौम का जन्म देश की स्वतंत्रता के लिए हुआ है और इन वीरों के होते हुए देश अब ज्यादा देर तक गुलाम नहीं रह सकता।"

इस प्रकार सिक्खों ने देश की आज़ादी में अन्य सभी कौमों से ज्यादा योगदान दिया है। इस योगदान का विवरण इस प्रकार है :-

	कुल	सिक्ख
फांसी	१२१	९३
कैद	२६४६	२१४७
कूका लहर में शहीद	९१	९१
जलियां वाला बाग में शहीद	१३००	७९९
अकाली लहर में शहीद	५००	५००

भारत की आज़ादी में ८०% सिक्ख शहीद हुए। देश की आज़ादी की कहानी को पूरा करने वाले सिक्ख ही थे :

अगर शामिल न हो किस्सा हमारा,
तुम्हारी दासतान कुछ भी नहीं।

जो प्रानी निसि दिनु भजै . . .

(पृष्ठ ३१ का शेष)

अहंकार, माया-मोह, विकारों को छोड़ना आवश्यक है तभी 'नाम' मन में सहज रूप से समा सकेगा। 'नाम' जपने से दिन-रात जीवन में बदलाव आता है और गुणों का प्रकाश होता है, जिससे 'नाम' जपने वाला परमात्मा को प्रिय लगने लगता है। नाम जपना है-- विकारों, मोह-माया का त्याग और गुणों का विकास। यह सहज प्रक्रिया परमात्मा की कृपा से आगे बढ़ती है। 'नाम' कुमति का हरण करने वाला है :

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥
जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ *(पन्ना १४२७)*

जपें भी और सुनें भी परमात्मा का नाम-यश, ताकि सारे कार्य सिद्ध हों और काल का भय जाता रहे। दिन-रात परमात्मा का नाम जपने वाला परमात्मा जैसे गुण पा लेता है :

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥
हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥
(पन्ना १४२७)

स्वतंत्रता संग्रामी गदरियों की ऐतिहासिक निशानी : कृपाण

*-स. सिमरजीत सिंघ**

गदर पार्टी के शूरवीर योद्धे शस्त्रधारी स्वतंत्रता संग्रामियों का समूह था, जो *"हत्थीं बाझ करारिआं वैरी होए ना मित्त"* विचारधारा के धारक थे। पंजाब में घटती ज़मीन, कम होती कृषि पैदावार, बढ़ते टैक्स तथा सरकारी धक्केशाही के कारण किसानों ने पूरबी एशिया के देशों की तरफ रोज़गार की तलाश में जाना शुरू कर दिया। सन् १८९७ ई में मलिका विक्टोरिया ने सिल्वर जुबली के समारोह आयोजित किए। इन समारोहों में भाग लेने के लिए पंजाब के सिक्ख फौजियों का एक जत्था भी लंदन गया। समारोह ख़त्म होने पर यह जत्था कनाडा के प्रसिद्ध प्रांत ब्रिटिश कोलंबिया से गुज़रता हुआ भारत वापिस आया। कनाडा के दौरे के दौरान उनको वहां की उपजाऊ धरती और पंजाब के साथ मेल खाती जलवायु एवं रोज़गार के साधनों ने बहुत प्रभावित किया। वापिस आकर इन्होंने ये सारी बातें अपने दोसतों-मित्रों तथा सगे-सम्बंधियों के साथ कर उनको अच्छे भविष्य के प्रति उत्साहित करके वहां जाने के लिए लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया। इनकी बातों से प्रभावित होकर कुछेक पंजाबियों ने हिम्मत करके किस्मत अज़माने हेतु कनाडा जाने की तैयारी कर ली। ये हांगकांग होते हुए सन् १९०४ ई में कनाडा शहर वैनकूवर चले गए। इन लोगों में ज्यादा संख्या मालवा तथा दोआबा क्षेत्र के अशिक्षित किसानों की थी। इन्होंने मेहनत कर अपने आपको एवं अपने परिवारों को खुशहाल कर लिया व अच्छा जीवन-यापन करने लगे। इनकी देखादेखी १९०८ ई तक पांच हज़ार के लगभग पंजाबी कनाडा पहुंच गए। इनमें ज्यादातर सिक्ख थे। थोड़े समय में ही इनकी संख्या बढ़कर आठ हज़ार के लगभग हो गई।

कनाडा में पंजाबियों की बढ़ रही संख्या तथा उनके मेहनती स्वभाव के कारण वहां के स्थानीय मज़दूर उनके साथ ईर्ष्या करने लगे। इस प्रभाव के अधीन कनाडा सरकार ने पंजाबियों के कनाडा में आने के कानून को सख़्त बनाकर पंजाबियों के आने पर एक तरह से अंकुश ही लगा दिया। पंजाबियों के साथ हो रही इस तरह की धक्केशाही का विरोध करते हुए श्री अमृतसर ज़िले के गांव सरहाली के निवासी बाबा गुरदित्त सिंघ ने कामागाटामारू जहाज़ द्वारा पंजाबियों को कनाडा लेकर जाने का प्रयत्न किया। कनाडा सरकार ने जहां पंजाबियों के साथ सरेआम धक्केशाही करते हुए उनको वापिस भेज दिया वहीं कोलकाता पहुंचने पर अंग्रेज सरकार के सिपाहियों द्वारा उन पर गोलियां चलाकर उनको शहीद कर दिया। इस घटना ने कनाडा में रहते पंजाबियों के दिलों को गहरी चोट पहुंचाई।

उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी किनारे के विकास हेतु भारी मात्रा में मज़दूरों की ज़रूरत थी। पंजाबियों के मेहनती स्वभाव के कारण इनको भर्ती करके अमेरिका भेजना शुरू कर दिया। भारतीय मज़दूरों की शिकागो तथा न्यूयार्क में मदद करने हेतु भारतीय मूल के अमेरिकियों ने 'इंडो अमेरिकन सोसायटी' नामक संस्था स्थापित कर ली। इसके अतिरिक्त 'इंडिया हाऊस'

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३*

नाम की संस्था भी स्थापित कर ली। यह संस्था भारत से शिक्षा हासिल करने के लिए आने वाले विद्यार्थियों की वित्तीय सहायता करती थी। इन्हीं दिनों में भारत से वे लोग भी जाना शुरू हो गए, जो भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आज़ाद करवाने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार थे। एशिया से गए मज़दूरों के साथ वहां के स्थानीय मज़दूर धक्केशाही करते रहते थे। अपने अधिकारों की रक्षा हेतु भारतीयों ने भाई भाग सिंघ की अध्यक्षता तले 'हिंदोस्तानी एसोसिएशन' स्थापित कर ली। इस संस्था द्वारा पंजाबियों को जागृत करने तथा घटित हर घटना की तुरंत सूचना देने हेतु पंजाबी भाषा में 'प्रदेसी खालसा' तथा उर्दू में 'स्वदेश सेवक' नाम की दो पत्रिकाएं प्रकाशित करनी शुरू कीं। इनके द्वारा भारतीयों को अपने हकों के बारे में सुचेत किया जाता था। इसके प्रभाव अधीन ही १५ दिसंबर, १९११ ई को 'यूनाईटेड इंडियन लीग' की स्थापना हुई।

सन् १९१२ ई में पोर्टलैंड में बाबा सोहन सिंघ भकना की अध्यक्षता तले 'हिंदोस्तानी एसोसिएशन ऑफ पैसिफिक कोसट' स्थापित की गयी। इस एसोसिएशन द्वारा मई, १९१३ ई में एक बड़ा समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में 'गदर आश्रम', जिसको 'युगांतर आश्रम' भी कहा जाता है, स्थापित करने का फैसला किया गया तथा 'गदर पार्टी' बनाने का फैसला भी हुआ, जिसका मुख्य कार्यालय सनफ्रांसिस्को में तथा कनाडा, अमेरिका में शाखाएं खोलने का फैसला किया गया। गदर पार्टी का मुख्य उद्देश्य भारत को शस्त्रधारी क्रांति द्वारा आज़ाद करवाना था। 'गदर' पार्टी ने गदर नामक साप्ताहिक मैगज़ीन नवंबर, १९१३ ई में प्रकाशित करना शुरू किया जो पहले उर्दू भाषा में छपता था और बाद में यह पंजाबी भाषा में भी प्रकाशित होने लगा। भारतीय सैनिकों में उत्साह भरने के मंतव्य से संस्था द्वारा 'हिंदोस्तानी सिपाही' नामक मैगज़ीन भी छपना शुरू हुआ।

१९१४ ई में पहला विश्व युद्ध आरंभ हो गया। मौके का फायदा उठाने के मंतव्य से गदरियों ने एक मीटिंग करके हिंदोस्तान में अंग्रेजों के विरुद्ध हथियारबंद कार्यवाही करने का फैसला किया। इस कार्य को सिरे चढ़ाने के लिए बहुत से लोग विदेशों से भारत आना शुरू हो गए। १५ फरवरी, १९१५ ई तक अलग-अलग देशों से लगभग २३१२ गदरी भारत पहुंच चुके थे। जल्दी ही इनकी संख्या बढ़कर आठ हज़ार के लगभग पहुंच गयी। अंग्रेजों को भी अपने गुप्तचरों द्वारा गदरियों के भारत पहुंचने की ख़बरें मिलनी शुरू हो गई थीं। अंग्रेज़ सरकार चौकस हो गई तथा हरकत में आकर इन गदरियों की हिंदोस्तान में आमद पर कड़ी नज़र रखने लगी। बहुत सारे गदरियों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा बहुत सारों को उनके गांवों में ही नज़रबंद कर दिया गया। अंदरखाते गदरियों ने अपने मंतव्य की सफलता हेतु कार्यवाहियां जारी रखीं। २१ फरवरी का दिन नियत करके बगावत आरंभ करने का फैसला किया गया। यह बात मुखबिर क्रिपाल सिंघ ने अंग्रेज सरकार के पास जा पहुंचाई, जिसका पता चलने पर गदरियों ने अपनी तारीख बदलकर १९ फरवरी कर ली। सरकार चौकस हो चुकी थी, जिसके फलस्वरूप कई स्थानों पर छापे मारकर गदरियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इनको सख़्त सज़ाएं दी गईं। इस प्रकार उस समय के मुखबिरों की घटिया हरकत के कारण आज़ादी हिंदोस्तान के दरवाज़े पर दस्तक देकर लौट गई।

गदरी फिर से अपनी शक्ति एकत्र करने में जुट गए। आयरलैंड के बाशिंदे भी अपने देश को अंग्रेजों की गुलामी से आज़ाद करवाने हेतु

जद्दोजहद कर रहे थे। आयरलैंड की आज़ादी का मुख्य देश-भक्त श्री डी. वैलरा १९१७ ई. में सनफ्रांसिस्को में गया तो वहां वो युगांतर आश्रम में गदरियों से मिलने के लिए भी गया। यहां देश-प्रेमियों ने अपने-अपने विचार एक-दूसरे के साथ सांझे किए। गदरियों ने श्री डी. वैलरा को एक कृपाण तथा एक झंडा सत्कार सहित भेंट किया। झंडा लाल, पीला और हरा तीन रंगों का था और उस पर दो कृपाणें बनी हुई थीं। गदरियों द्वारा श्री डी. वैलरा को कृपाण भेंट करने का मकसद उनको यह संदेश देना भी था कि वो अपने देश की आज़ादी के लिए शस्त्रबद्ध बगावत की अगुआई करें। पंजाबी सिक्ख इस बात से भली-भांति अवगत थे कि सिक्ख न किसी को गुलाम बनाता है और न ही बनता है। इस मंतव्य के लिए उनके सामने गुरमति, सिक्ख गुरु साहिबान तथा सिक्खों की बेमिसाल शहीदियां और दशमेश पिता जी द्वारा बख़्शिश कृपाण की उदाहरणें थीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा दी शिक्षा 'जब कोई अन्य प्रयत्न न रहे तो कृपाण उठाना ही जायज़ है' पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनके मन में सफर करती आ रही थी।

गदरियों ने श्री डी. वैलरा के साथ हिंदोस्तान की आज़ादी हेतु हथियारबंद बगावत करने सम्बंधी अपने विचार भी सांझे किए। दोनों देशों में अपनी-अपनी आज़ादी के लिए किए जाते कार्यों की प्रशंसा भी की तथा एक-दूसरे से अगुआई भी ली।

अनेकों शहीदियों, कुर्बानियों तथा जद्दो-जहद के बाद १५ अगस्त, १९४७ ई. को हिंदोस्तान आज़ाद हो गया। दूसरी तरफ, आयरलैंड भी अपनी हथियारबंद लड़ाई लड़ता हुआ अंग्रेजों की गुलामी से निज़ात पा चुका था। आज़ादी के बाद भारत के राष्ट्रपति डॉ. राधा कृष्णन आयरलैंड के प्रधानमंत्री श्री डी. वैलरा को मिलने के लिए गए। इस मुलाकात के दौरान श्री डी. वैलरा ने राष्ट्रपति डॉ. राधा कृष्णन को वही कृपाण, जो गदरियों ने उनको भेंट की थी, प्रदान की तथा कृपाण भेंट करने सम्बंधी सारी वार्ता भी बताई। राष्ट्रपति डॉ. राधा कृष्णन यह कृपाण भारत ले आए। इस कृपाण की एक तस्वीर 'देश-भक्त हॉल, जलंधर' में मौजूद है। असली कृपाण कहां है, इसके बारे में कुछ पता नहीं चल सका।

कविता

व्यर्थ में भी अर्थ

-श्री प्रशांत अग्रवाल

घिन आती है जिस कूड़े से, वह भी बनता खाद।
मिट्टी में मिलकर देखो, क्या-क्या करता ईजाद!
क्यों न हम भी मन के कूड़े को उपयोग में लायें।
सतसंगत की मिट्टी से हम, उसको 'खाद' बनायें।
गंदे नाले का पानी भी, अगर खेत में जाये।
छोड़ गंदगी पानी पीकर, फसल झूम कर गाये।
इसी तरह नर, त्याग बदी को, नेकी को अपनाये!
जीवन-फसल सदा झूमेगी, कभी नहीं मुरझाये।

*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.), मो : ९४११६०७६७२

गुरबाणी चिंतनधारा : १०३

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

सलोक मः १ ॥
हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥
हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥
हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥
हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥
हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥
हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥
हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥
हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥
मोख मुकति की सार न जाणा ॥
हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥
हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥
हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥ (पन्ना ४६६)

श्री गुरु नानक पातशाह ने उपरोक्त सलोक में जीव की समस्त क्रियाओं को अहंकार के अधीन माना है। अहंकारग्रस्त होकर ही जीव पाप-पुण्य के कर्म करता हुआ आवागमन के चक्कर में फंसा रहता है। वह अहंकारवश होकर ही खुद को परमेश्वर से अलग मानता है। यही इसकी सबसे बड़ी भूल है और इसी अहंकार में गलतान हुआ जीव अज्ञानतावश प्रभु के हुक्म की व्याख्या भी अपने ही अनुरूप करने की भूल करता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि (जब तक) मनुष्य अहंकारवश परमात्मा से अलग अपनी हस्ती बना लेता है (तब तक) यह कभी जन्म लेता है और कभी कालग्रस्त हो जाता है अर्थात् जन्म-मृत्यु के चक्कर में पड़ा रहता है। इस प्रकार यह संसार में आता है और चला जाता है। अहंकारवश ही यह जन्म लेता है और अहंकार-अधीन ही मरता है। अहंकारवश ही जीव कभी अपनी ज़रूरत के लिए दूसरों से लेता है और अहंकारवश ही ज़रूरतमंद को देता है। यह लेन-देन का सिलसिला जीव का जगत में अहंकार के अधीन ही चलता है। अहंकारवश ही जीव कभी लाभ का सौदा करता है तो कभी हानि का अर्थात् अहंकारग्रस्त जीव जीवन में कभी कमाता है तो कभी गंवाता है। अपने अहंकार के वशीभूत होकर ही कभी संसार में सच्चा माना जाता है तो कभी झूठा। अहंकारवश मेरा-तेरा का भाव ही इसे किसी की नज़र में सच्चा तो किसी की नज़र में झूठा साबित करता है। अहंकार के अधीन ही जीव पाप एवं पुण्य-कर्म का लेखा-जोखा करता है अर्थात् ईश्वर से अपना अलग अस्तित्व कायम करके कभी पाप-कर्म में तो कभी पुण्य-कर्म की गिनती करने में लगा रहता है। अहंकार के फलस्वरूप ही जीव स्वर्ग अथवा नरक में पड़ता है। अहंकारवश ही जीव कभी हंसता है तो कभी रोता है। अहंकारवश ही ईश्वर से स्वयं को अलग मानता हुआ यह पापग्रस्त हो जाता है तो कभी अपने उद्यम से उस मैल को धोता है अर्थात् अहंकारवश ही पापों से भर जाता है और अहंकारवश ही पुण्य कमा

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

लेता है। अहंकारवश वह अपनी जाति एवं वर्ग में फंसकर (जात-पात के ख़्याल में) तथाकथित ऊंची जाति का अभिमान करता हुआ अपना आप गंवा बैठता है।

अहंकारवश जीव अपना अलग अस्तित्व कायम करने के कारण ही दुनिया में कभी मूर्ख तो कभी सूझवान (समझदार) समझा जाता है। जीव दुनिया की परवाह करता हुआ अहं-भाव से भरे होने के कारण मोक्ष और मुक्ति (जीते जी विकारों से मुक्त हो जाना) के भेद को नहीं समझता। अहंकारवश जीव माया के प्रभाव अधीन भ्रमित ही रहता है अर्थात् जीव ईश्वर से बिछुड़कर माया अधीन होकर इसे ही सर्वस्व मानता हुआ माया को मुक्ति की धारणा बना लेता है। इसी में लीन होकर ही आवागमन के चक्कर में पड़ा रहता है। अहंकारवश प्रभु से बिछुड़ा हुआ जीव बार-बार जन्म लेता है अर्थात् चौरासी के चक्कर में भटकता रहता है।

अगर जीव को अहंकार का वास्तविक स्वरूप समझ आ जाए अर्थात् अगर मनुष्य भली-भांति यह समझ ले कि मैं सुख एवं आनंद के असली स्रोत अर्थात् परमात्मा से अपने अहं के कारण बिछुड़ा हुआ हूं तभी इसे प्रभु के दर की समझ आती है, नहीं तो जीव वास्तविक ज्ञान से वंचित रहता हुआ अंदर से दुखी रहता है अर्थात् सच्चे सुख से वंचित रहता है।

श्री गुरु नानक पातशाह अंतिम पंक्ति में फरमान करते हैं कि जैसा जीव दूसरों को देखता है अर्थात् जिस नीयत से मनुष्य दूसरों को देखता है अथवा व्यवहार करता है उसी तरह के संस्कारों का निर्माण मनुष्य के अंदर होना शुरू हो जाता है और वैसा ही मनुष्य का स्वरूप और स्वभाव बन जाता है। इसके अंदर अलग अस्तित्व के भाव अर्थात् अहंकार की उत्पत्ति होती है। यह भी अटल सच्चाई है कि सब कुछ परमेश्वर के हुक्म में ही हो रहा है।

उपरोक्त सलोक में गुरु पातशाह ने अहंकार (हउमै) के अधीन हो रहे प्रत्येक कर्म को दर्शाया है। यह अटल सत्य है कि अहंकार एवं माया के अधीन इंसान में अंदर से इंसानियत का गुण धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और जीव राक्षस वृत्ति वाला हो जाता है। केवल परमेश्वर का नाम ही माया के प्रभाव से रहित है जैसा कि जपु जी साहिब में गुरु पातशाह का फरमान है :

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ (पन्ना ३)

वस्तुतः सांसारिक जीवों एवं पदार्थों के प्रति जितना मोह तथा आसक्ति है उतनी ही प्रभु से दूरी है और जितनी प्रभु से दूरी है उतना ही दुख, क्लेश एवं चिंता है। सांसारिक जुड़ाव तथा परमेश्वर से दुराव अर्थात् दूरी के फलस्वरूप दुविधापूर्ण स्थिति में किए गए समस्त कर्म व्यर्थ हैं। पावन बाणी का प्रमाण है :

जारउ ऐसी प्रीति कुटंब सनबंधी माइआ मोह पसारी ॥
जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥ (पन्ना ११९८)

माया की धारणा वाला मनुष्य उठते-बैठते माया की उधेड़-बुन में रहता है। सारे रिश्तों को माया से ही नापता-तोलता है। और तो और उसे तो माया का ऐसा मोतियाबिंद आंखों में उतरता है कि उसे सारी सृष्टि में परमात्मा होने का एहसास ही नहीं होता। गुरबाणी में फरमान है कि किस प्रकार जीव प्रत्येक प्राप्ति का गुमान और अहंकार करता है। जिस परमेश्वर की बदौलत उसे सब कुछ नसीब हुआ है उसे भुलाकर वह हमेशा दुखी होता है। पंचम पातशाह की बाणी प्रमाणस्वरूप उल्लेखनीय है :

हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥
हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥
हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥
करणैहारु न बुझै बिगाना ॥ (पन्ना १७८)

गुरबाणी हमें यही समझाती है कि हे इंसान! तू क्या अपनी ताकत की बात करता है ? तेरे आस-पास सब मायावी शोर-शराबा है। करने-करवाने वाला ईश्वर है जो सबके दिलों की जानता है :

किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥
झूठा माइआ का सभु सोरु ॥
करण करावनहार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (पन्ना १७८)

जीव को अपने मूल से जुड़ने की आवश्यकता है। अपने मूल से जुड़कर जीव को हुक्म की समझ आती है। गुरु पातशाह ने जपु जी साहिब की बाणी में इस रहस्य को समझाया है :

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

जो उसके हुक्म को बूझ लेता है वह अहंकार की बात नहीं करता। वैसे भी अहंकार और परमेश्वर के नाम में विरोधाभास है। दोनों का एक जगह रहना नामुमकिन है :

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥१॥
(पन्ना ५६०)

बाणी आशयानुसार अहंकारी मन सेवा नहीं कर सकता और सेवा के बिना हृदय में परमेश्वर का सिमरन नहीं टिक सकता। इस प्रकार सेवा और सिमरन के बिना अहंकारी मन अपना बेशकीमती जीवन कौड़ियों के भाव गंवा लेता है।

महला २ ॥
हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥
(पन्ना ४६६)

यह सलोक दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा उच्चरित है। इसमें गुरु साहिब ने अहंकार की प्रवृत्ति, स्वभाव, लक्षण एवं उसके परिणामस्वरूप होने वाले नुकसान से जीव को सुचेत किया है। साथ ही एक गूढ़ रहस्य का उद्‌घाटन भी किया है कि हउमै सबसे बड़ा रोग है और इसका इलाज किसी दुनियावी वैद्य, हकीम या डॉक्टर के पास नहीं है। इस दीर्घ रोग की समझ आ जाए तो इसका इलाज गुरबाणी द्वारा ही संभव है।

श्री गुरु अंगद देव जी पावन फरमान करते हैं कि अहंकार का स्वभाव ही यही है कि वह परमेश्वर से अपना अलग अस्तित्व कायम करने की चेष्टा करता है, जिसके फलस्वरूप उसका प्रत्येक कर्म हउमै के अधीन होता है। हउमै बंधनों की ऐसी जंज़ीर है, जिसमें जकड़े हुए जीव बारंबार आवागमन के चक्कर में पड़े रहते हैं। अहंकार की बेड़ियां उन्हें बंधनों की गिरफ्त से मुक्त नहीं होने देती तथा जीव चौरासी के चक्कर में भटकता रहता है। गुरु साहिब ने जीव की मनोस्थिति को उजागर करते हुए एक प्रश्न उठाया है कि आखिर यह अहंकार पैदा कहां से होता है और यह भ्रम-जाल टूट कैसे सकता है? अर्थात् जीव में परमेश्वर से अलग अस्तित्व कायम करने की भावना पैदा कैसे होती है और उससे अलग अस्तित्व के परिणामस्वरूप दुखी होता जीव इस भाव से मुक्त होने का प्रयास कैसे कर सकता है?

उपरोक्त प्रश्न का सहज उत्तर देते हुए गुरु साहिब स्पष्ट करते हैं कि अलग अस्तित्व कायम करने की फितरत जीव के अंदर प्रभु के हुक्म से ही है तथा जीव पिछले किए कर्मों के संस्कारों के अनुसार बार-बार वैसे ही कर्म करने को दौड़ता है अर्थात् पूर्व में किए कर्मों

के फलस्वरूप स्वभावगत उसी तरह के कर्मों में ही लिप्त रहता है। वास्तव में हउमै बड़ा रोग है अर्थात् गुरु साहिब के चिंतनानुसार अहंकार रूपी रोग लंबे अरसे से चला आ रहा है। यह लाइलाज भी नहीं है अर्थात् इसका इलाज बेशक दुनियावी वैद्य-हकीमों के पास उपलब्ध नहीं है लेकिन अगर परमात्मा कृपा करे तो जीव गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलकर, नाम रूपी औषधि लेकर इस रोग से मुक्त हो सकता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि इस विधि से हउमै का रोग व इस रोग से उत्पन्न हुए दुख दूर हो सकते हैं।

गुरबाणी में गुरु को ही सच्चा वैद्य बताया गया है, जो हरि-नाम की औषधि जीव के मुख में डालता है, जिसके फलस्वरूप यमों का फंदा कट जाता है :

मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥रहाउ॥
समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥
अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥ (पन्ना ६१८)

सचमुच इस दीर्घ रोग से बचने का एक मात्र उपाय है अकाल पुरख की रहमत से सच्चे गुरु की प्राप्ति; जिसके लिए गुरबाणी में पावन संदेश है :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ (पन्ना १३९९)

अहंकारवश परमेश्वर से टूटे जीवों की दशा का बयान करते हुए चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि जीव के हृदय में अहंकार रूपी कांटा गड़ा हुआ है। जैसे-जैसे जीव सांसारिक कार्य-व्यवहार करता है यह अहंकार रूपी कांटा अधिक चुभना शुरू हो जाता है। जीव निरंतर दुखी होता है तथा अपने सिर पर यमदंड के भय को भी झेलता है :

साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ (पन्ना १३)

काश! हमें इस दीर्घ रोग से मुक्त होने की ज़रूरत महसूस हो और हमें गुरबाणी का पावन संदेश समझ आ जाए कि साधसंगत में आकर गुरु-कृपा से ही अहंकार का इलाज संभव है। उसके बाद प्रभु-प्राप्ति सहज ही हो जाती है :

साधसंगि जिह हउमै मारी ॥
नानक ता कउ मिले मुरारी ॥ (पन्ना २५५)

पउड़ी ॥
सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
वडिआई वडा पाइआ ॥७॥ (पन्ना ४६७)

इस पउड़ी में गुरु साहिब ने संतोषी व्यक्ति की उपमा की है। जीव संतोष रूपी गुण का धारणी बनकर दुनिया के झूठे बंधनों से मुक्त हो जाता है। संतोषी व्यक्ति हमेशा अकाल पुरख परमेश्वर पर विश्वास रखता हुआ नेक कर्म करता है तथा प्रभु का गुणगान करते-करते सहजावस्था में ही हरि को प्राप्त कर लेता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो संतोषी जीव सदैव अविनाशी प्रभु की आराधना करते हैं वही वास्तव में प्रभु की सेवा करते हैं। (कुछ चिंतकों के चिंतनानुसार सच्ची सेवा संतोष धारण करने वालों ने ही की है।) उन्होंने (संतोषी व्यक्ति ने) कभी पाप-कर्म नहीं किए अर्थात् उनके पैर गलत रास्ते पर नहीं पड़े। वे सदैव नेक कर्म करते हुए धर्म कमाते हैं अर्थात् नेक कर्म धर्म की खातिर करते हैं

मात्र दिखावे के लिए नहीं।

वे दुनिया के धंधों में गलतान नहीं होते। उन्होंने मोह-माया की जंज़ीरों के बंधनों को तोड़ दिया है। वे अन्न-पानी भी थोड़ा ही ग्रहण करते हैं अर्थात् जीवन-निर्वाह के लिए भोजन करते हैं, जीभ के स्वाद के लिए नहीं। वे झूठे रसों-कसों के स्वाद से बचे रहते हैं।

हे वाहिगुरु जी! आप बहुत बड़ी रहमतों के मालिक हो और नित्यप्रति अर्थात् हमेशा ही देते रहते हो। आपकी बख़्शिशें कभी घटती नहीं बल्कि बढ़ती ही रहती हैं। संतोषी वृत्ति वाले जीवों ने परमेश्वर की उपमा निरंतर करते हुए अर्थात् हरि के गुण-गायन करते हुए हरि को पा लिया है। उन पर परमेश्वर की विशेष कृपा-दृष्टि होती है।

एक विशेष तथ्य जो इस पउड़ी में गुरु साहिब ने उजागर किया है वो है कि संतोषी स्वभाव वाले व्यक्ति किस प्रकार परमेश्वर की रहमतों के विशेष पात्र बन जाते हैं। साथ ही संतोषी व्यक्ति के प्रमुख गुणों को भी इस पउड़ी में दर्शाया गया है कि संतोषी व्यक्ति झूठे रसों से मुक्त रहते हैं। वे जीने के लिए खाते हैं, खाने के लिए कदाचित नहीं जीते। गुरबाणी में अन्यत्र भी हमें इसी भाव के दर्शन होते हैं कि बिना संतोष रूपी धन के आज तक कोई तृप्त नहीं हुआ। सुखमनी साहिब में गुरु पंचम पातशाह ने भी इसी तथ्य को प्रतिपादित किया है :

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥ (पन्ना २७९)

यही नहीं, जिनकी तृष्णा बुझ गई, जिन्हें आत्म-ज्ञान प्राप्त हो गया और मन में पूर्ण संतोष आ गया वे प्रभु के बिना कोई अभिलाषा नहीं रखते :

काहू फल की इछा नही बाछै ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
(पन्ना २७४)

कविता

आपकी कृपा से

मैं गरीब
मैं मसकीन
मेरे परम पिता जी!
आपके दर पर आया।
बनकर सवाली
आपके दर आया।
आपकी कृपा हुई
आपने रास्ता सुझाया।
आपने रास्ता बताया।
आपने सोच दी
आपने सामर्थ्य दी
मेरे पांव को
अन्य राहों से रोक
इस राह पर चलाया।
कृतज्ञ हूं
कृतार्थ किया
मेरा चलकर आना
प्रयोजन आपने बनाया।
एक कृपा मैं
आपसे और चाहूं
चलता रहूं इसी राह
न कभी बहकूं
न जा सकूं बहकाया।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६

ख़बरनामा

जत्थेदार अवतार सिंघ ने स. वरिंदर सिंघ को कैलीफोर्निया में पहला पुलिस अधिकारी बनने पर मुबारकबाद दी

श्री अमृतसर : १६ जून : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अमेरिका के राज्य कैलीफोर्निया के मोडेस्टो शहर में स. वरिंदर सिंघ को पहले सिक्ख पुलिस अधिकारी के रूप में शपथ लेने पर मुबारकबाद देते हुए कहा कि इस नियुक्ति से सिक्खों का सिर गर्व से ऊंचा हुआ है।

उन्होंने कहा कि सिक्खों ने विश्व स्तर पर अपनी कड़ी मेहनत का सदका पंजाब तथा पंजाबियत का नाम पूरी दुनिया में रौशन किया है। उन्होंने कहा कि स. वरिंदर सिंघ को दसतार तथा दाढ़ी सहित ड्यूटी पर आने की अनुमति देना प्रशंसनीय फैसला है। उन्होंने कहा कि इससे पहले कनाडा की नयी बनी टरूडो सरकार ने स. हरजीत सिंघ सज्जन को रक्षा मंत्री बनाकर सिक्खों को सम्मान दिया था।

अफगानिस्तान में सिक्खों की सुरक्षा संबंधी जत्थेदार अवतार सिंघ ने लिखा प्रधानमंत्री को पत्र

श्री अमृतसर : २९ जून : अफगानिस्तान में सिक्खों की सुरक्षा एवं समस्याओं के मुद्दे पर जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर अफगानिस्तान सरकार के साथ बातचीत करने के लिए अनुरोध किया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रवक्ता स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने अपने पत्र में श्री नरेंद्र मोदी का ध्यान अफगानिस्तान में रह रहे सिक्खों की समस्याओं की तरफ दिलाते हुए कहा है कि मीडिया द्वारा ख़बर आई है कि अफगान तालिबान तथा अन्य ग्रुपों द्वारा सिक्ख परिवारों को लगातार धमकियां दी जा रही हैं कि वे या तो पैसे दें नहीं तो देश छोड़कर कहीं और चले जाएं। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले काबुल में हिकमत (चिकित्सा) का काम करने वाले स. जगतार सिंघ नामक अफगानी सिक्ख को सांप्रदायिक तत्वों ने उसकी दुकान पर जाकर उसकी गर्दन पर चाकू रखते हुए कहा कि वो इस्लाम कबूल कर ले नहीं तो उसे कत्ल कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस सिक्ख की राहगीरों व पड़ोसियों ने बड़ी मुश्किल से जान बचाई। उन्होंने कहा कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने पत्र में एक अन्य घटना का ज़िक्र करते हुए कहा कि अफगानिस्तान के हेलमंद राज्य में तालिबानियों ने सिक्ख एवं हिंदू भाईचारे के लोगों को २८०० डालर प्रति माह देने के लिए कहा है। न देने की सूरत में इलाका छोड़ जाने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि काबुल से बाहर कलाचा क्षेत्र में सिक्खों एवं हिंदुओं का शमशानघाट होने के कारण भी तनाव फैला हुआ है। उन्होंने कहा कि कई मुसलमान लोगों ने शमशानघाट के निकट मकान बनाए हैं और ये लोग वहां पर सिक्खों को मृतक देहों का दाह संस्कार नहीं करने देते। जब कोई मृतक देह दाह संस्कार के लिए लाई जाती है तो ये लोग पत्थर मारते हैं। स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने पत्र के माध्यम से श्री नरेंद्र मोदी को अफगानी सिक्खों की समस्याओं से अवगत कराते हुए उन्हें व्यक्तिगत रूप

से दिलचस्पी लेकर अफगानिस्तान में रह रहे सिक्खों की समस्याओं को जल्दी हल करने के लिए अफगानिस्तान सरकार पर राजनैतिक ढंग से दबाव बनाए जाने के लिए आग्रह किया है।

जगदीश टाईटलर केस में सी. बी. आई. द्वारा अदालत में पूरी जांच रिपोर्ट दाखिल न करना दाल में कुछ काला

श्री अमृतसर : १२ जुलाई : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने कांग्रेसी नेता जगदीश टाईटलर के विरुद्ध कड़कड़डूमा अदालत में सी. बी. आई. द्वारा पूरी रिपोर्ट पेश न करने पर इसको अभाग्यपूर्ण बताते हुई ढीली कारगुज़ारी बताया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि जगदीश टाईटलर द्वारा १९८४ ई के सिक्ख कत्लेआम में जो निंदनीय भूमिका निभाई गई थी, उससे सिक्खों का बच्चा-बच्चा वाकिफ है। इतना लंबा समय गुज़र जाने के बाद भी सिक्खों को अभी तक इंसाफ न मिलना सी. बी. आई. की बहुत बड़ी लापरवाही है। उन्होंने कहा कि अदालत को सी. बी. आई. के जांच अधिकारियों से उनकी इस लापरवाही के लिए स्पष्टीकरण मांगना चाहिए। उन्होंने कहा कि सी. बी. आई. का टाईटलर सम्बंधी पूरी रिपोर्ट पेश न करना इस बात का सबूत है कि कहीं न कहीं दाल में कुछ काला है।

श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज एण्ड रीसर्च को यूनीवर्सिटी बनाने का फैसला प्रशंसनीय : जत्थे. अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १३ जुलाई : स. रघूजीत सिंघ वरिष्ठ उपाध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. केवल सिंघ बादल कनिष्ठ उपाध्यक्ष, स. रजिंदर सिंघ महिता, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. दिआल सिंघ कोलियांवाली, स. रामपाल सिंघ बहिणीवाल, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. मोहण सिंघ बंगी तथा स. गुरबचन सिंघ करमूंवाल कार्यकारिणी सदस्य ने पंजाब मंत्री-मंडल की बैठक में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा संचालित श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ एण्ड रीसर्च (वल्ला) को श्री गुरु रामदास यूनीवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसज़ बनाने के फैसले पर खुशी का इज़हार करते हुए पंजाब सरकार का धन्यवाद किया तथा जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को मुबारकबाद दी। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि स. प्रकाश सिंघ बादल मुख्यमंत्री पंजाब तथा स. सुखबीर सिंघ बादल उप-मुख्यमंत्री पंजाब की दूरंदेशी सोच का सदका पंजाब मंत्री-मंडल की बैठक में लिया गया फैसला प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसज़ एण्ड रीसर्च देश की नामवर मेडिकल संस्थाओं में पहले से ही प्रमुख संस्था के रूप में पहचान बना चुकी है तथा यहां से शिक्षित विद्यार्थी देश-दुनिया में स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस संस्था द्वारा जहां विद्यार्थियों को अकादमिक क्षेत्र में प्रवीण बनाया जाता है, वहीं उनको नैतिक जीवन-मूल्यों की रौशनी में समाज-सेवा के लिए भी तैयार किया जाता है। अब इस संस्था के यूनीवर्सिटी बनने से इसका स्तर और भी ऊंचा होगा और यहां से पढ़े हुए विद्यार्थियों को एक नयी पहचान मिलेगी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दिलजीत सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ***01-08-2016***